चकमक

नवम्बर, 2000 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00



मेरा पन्ना अंक

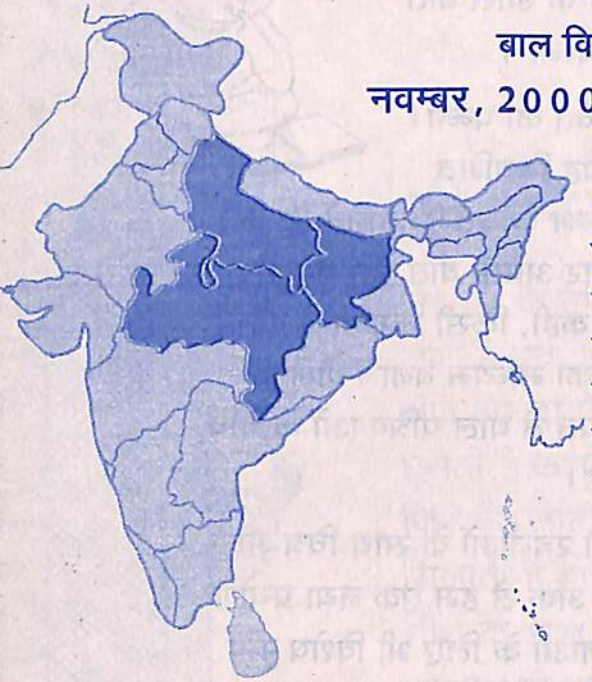


पुरु खोलिया, दिल्ली

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
नवम्बर, 2000 के 182 वें अंक में



विशेष

नए राज्यों का बनना

एक हमारा देश है, और उसमें बहुत सारे राज्य हैं। कई लोग यह मानते और कहते रहे हैं कि बड़े राज्यों को अलग- अलग करके और छोटे राज्य बनाए जाने चाहिए। इसी माँग के कारण तीन नए राज्य बनाए जा रहे हैं। क्यों बनाए जाएँ नए राज्य, क्या फर्क पड़ता है इससे? पढ़ो पेज 19 पर।

सिडनी ओलम्पिक 2000



हर चार साल में होने वाले ओलम्पिक खेलों की सन् 2000 की प्रतियोगिताएँ सिडनी में हुईं। वैसे तो इस खेल उत्सव के बारे में तुम बहुत कुछ पढ़ ही चुके होगे। इस ओलम्पिक में हुई कुछ घटनाओं के बारे में चकमक में भी पढ़ो पेज 30 पर।

कहानी

कविताएँ

हर बार की तरह

रोचक श्रृंखला

धारावाहिक

और भी बहुत कुछ

आवरण : रंजित बालमुचु

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .



अगर कोई पूछे कि चकमक की केवल एक खास बात बताइए, तो हमारा जवाब होगा, 'मेरा पन्ना'।

मेरा पन्ना यानी बच्चों की अभिव्यक्ति का पन्ना। चकमक जब से आरम्भ हुई है तब से यह नियमित रूप से छप रहा है। हर अंक में इस स्तम्भ के छह पन्ने होते हैं। अब तक इन पन्नों पर सैंकड़ों नन्हे रचनाकार अपनी बात कह चुके हैं। किसी ने अपनी बात कविता के रूप में कही, किसी ने कहानी की शक्ल में। चित्रों को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने वाले भी कम नहीं हैं। मेरा पन्ना की इस खासियत ने बाल पत्रिकाओं के बीच चकमक का एक अलग स्थान बनाया है।

अभी तक इन पन्नों पर छपने वाली रचनाओं के साथ चित्र भी बाल-रचनाकारों के ही होते थे। पर इस अंक से हम एक नया प्रयोग शुरू कर रहे हैं। अब इन पन्नों की रचनाओं के लिए भी विशेष रूप से चित्र बनवाए जाएँगे। साथ ही बच्चों के चित्रों को आधार बनाकर कविता या कहानी या लेख लिखने की कोशिश भी होगी।



हमारा मानना है कि इससे बाल रचनाकारों को और प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही बड़े भी इन अभिव्यक्तियों को एक नई नज़र से देखने का प्रयास कर सकेंगे।

यह प्रयोग पाठकों को कैसा लगा, यह हम ज़रूर जानना चाहेंगे।

चित्र : माधुरी पुरंदरे

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-16 अंक-5 नवम्बर, 2000

सम्पादन: विनोद रायना, राजेश उत्साही, कविता सुरेश, टुलटुल विश्वास

विज्ञान परामर्श: सुशील जोशी

वितरण: कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

सहयोग: राकेश खत्री, सुशील शुक्ल

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

शीशे पर चिड़िया

मेरे घर के वाशबेसिन पर
लगा है एक शीशा
रोज आ जाती हैं वहाँ चिड़ियाँ
घूमती हैं कमरे में इधर-उधर
फिर बैठ जाती हैं शीशे पर
मिलाती हैं बार-बार चोंच
शीशे के अन्दर दिख रही चिड़ियों से।
परेशान हो जाती हैं चिड़ियाँ
बुलाती हैं और चिड़ियों को
चीं-चीं-चीं-चीं-चीं कर-करके
सब की सब बैठ जाती हैं शीशे पर
करती हैं अपनी-अपनी
चोंचों से बार-बार शीशे पर प्रहार
और होती रहती हैं परेशान॥

● प्रत्यूष, दसवीं, होशंगाबाद, म. प्र.
● चित्र : दुर्गा बाई

मेरा पन्ना

छिपकली

रोज छिपकली आती है,
घर के कीड़े खाती है,
मम्मी उसे देखती है
और तुरन्त डर जाती है,
हम सबको बीमारी से
भी तो बहुत बचाती है
जाने उसको देखकर
सबको घिन क्यों आती है।

● ईप्सा यादव, आठवीं, मथुरा, उ. प्र.

मेरा फल

एक बार मैं, मेरा भाई सुन्दर और मम्मी शेखर मामाजी के यहाँ गए। मेरे मामा जी बड़वाह में रहते थे। मेरी मौसी भी वहाँ रहती थी।

हमें वहाँ बहुत अच्छा लगा। एक बार मेरा बड़ा भाई सुन्दर मेरी मौसी के यहाँ से आ रहा था। रास्ते में एक पेड़ पर एक बन्दर बैठा था। मेरे भाई सुन्दर के हाथ में एक फल था। वह फल को उछालता हुआ आ रहा था। वह चलते-चलते उस पेड़ के नीचे गया। जैसे ही उसने फल को उछाला बन्दर ने पकड़ लिया और वह भाग गया। मेरे भाई ने बोला, अरे ऐ बन्दर, ये फल तो मेरा है और तुम इसको लेकर कहाँ चल दिए। बन्दर ने कहा, ये फल मेरा है, और मेरा भाई देखता ही रह गया।

● सुनिल मनावरे, सातवीं, चोली, खरगोन, म. प्र.



● शान्तनु वर्मा, चौथी, भोपाल, म. प्र.

मैं ठगा गया

एक बार की बात है कि मेरी मम्मी ने कहा कि अभय तुम बाजार चले जाओ और राशन ले आओ। तो मैं बाजार चला गया। वहाँ पर मैंने एक दुकानदार से पूछा कि शक्कर का क्या भाव है ? वह बोला, चार रुपए पाव। मैंने कहा मुझे तीन किलो दे दो तो उसने तौल दी। मैं लेकर घर चला आया। आकर मैंने घर पर शक्कर तौली तो सवा दो किलो ही निकली। तो मम्मी ने मुझे डाँटा। मैं उस दिन से प्रत्येक दुकान पर खुद सामने तुलवाता हूँ। लोग मुझे उसी दिन से बुद्धू कहने लगे, क्योंकि मैं ठगा गया था।

● **अभय कुमार जैन, पाँचवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.**

ऐक्सीडेन्ट

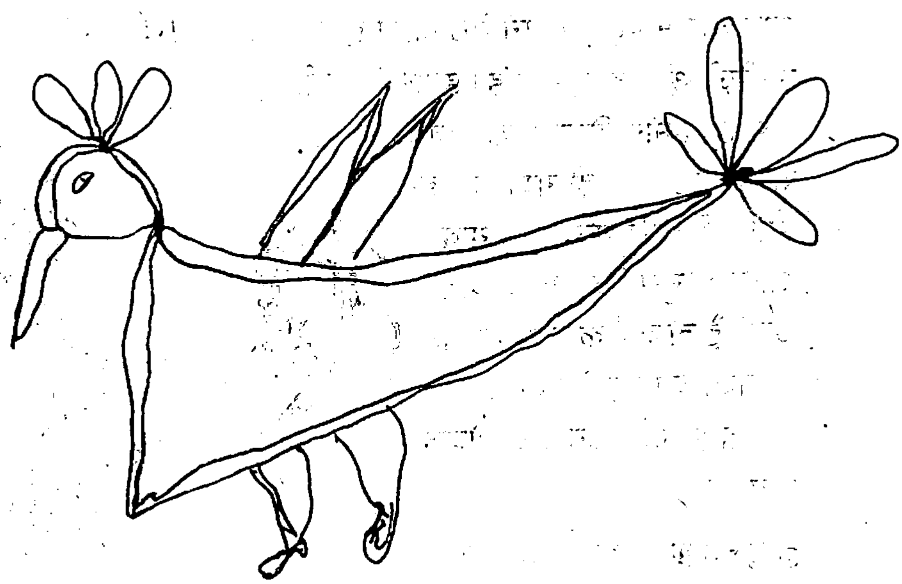
एक बार मैं और मेरा बड़ा भाई बाजार से कुछ राशन खरीदने गए। उधर से एक बस आ रही थी कि अचानक मैं घातक ऐक्सीडेन्ट से बच गया। फिर वहाँ कुछ लोग इकट्ठे हो गए। फिर वहाँ बस कन्डक्टर उतरा। फिर उसे सभी लोगों ने डाँटा कि गाड़ी ऐसी चलाते हो। अभी उसका ऐक्सीडेन्ट हो जाता तो तुम क्या कर लेते। मेरे बड़े भाई ने बस वाले भाई को कहा कि अब ऐसी गाड़ी मत चलाना। फिर मेरे बड़े भाई ने बस वाले भाई को माफ कर दिया।

● **राजेश, आठवीं, खरगोन, म.प्र.**

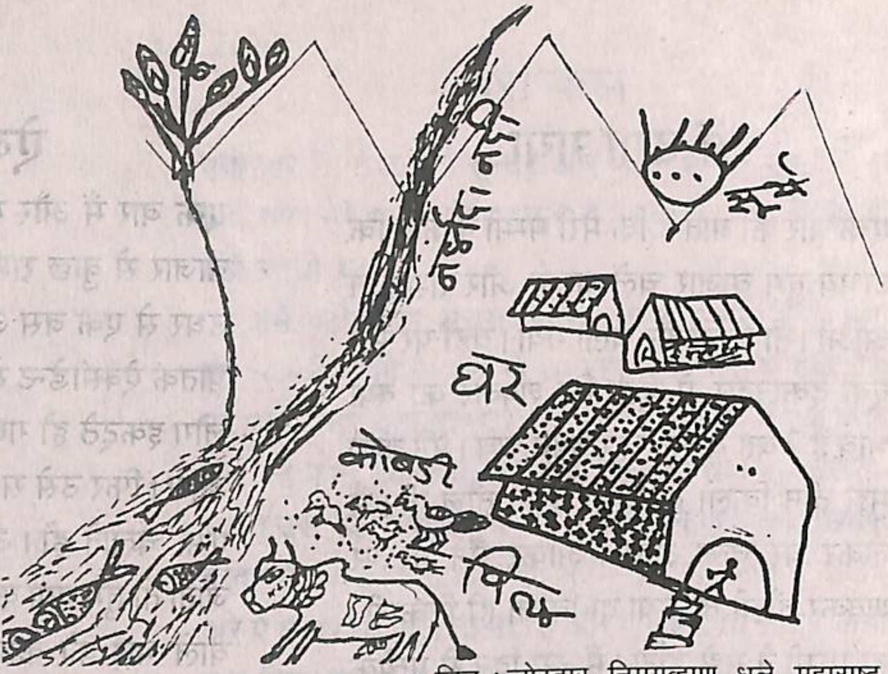
मेंढक की सैर

मेंढक के हैं चार पैर।
मेंढक ऐसा चलता।
जगह पर उछलता।
जल्दी-जल्दी दौड़े।
पिछले पैर हैं चौड़े।
लम्बे-चौड़े जालीदार।
यही उछलने का आधार।
अगले पैर हैं छोटे।
थककर धीरे-धीरे लौटे।

● शाश्वत माहोलकर, पाँचवीं, खण्डवा, म.प्र.



● **चित्र : जितेन्द्र, करोहन, उज्जैन, म.प्र.**



● चित्र : जोरदार, निमगव्हाण, धुले, महाराष्ट्र

मेरे परिवार की कहानी

मैं अपने छोटे से परिवार की कहानी लिख रहा हूँ। मेरे परिवार में सुबह के पाँच बजे मेरी मम्मी उठती है। और भगवान का नाम लेती है। फिर बड़े भैया को जगाती है, बड़े भैया मुझे उठाते हैं। हम दोनों भाई घर का काम करते हैं। फिर हम दोनों भाई स्नान करते हैं। स्नान करके हम दोनों भाई भगवान का पाठ करते हैं। और फिर मैं पढ़ाई करता हूँ और पढ़ाई करके स्कूल चला जाता हूँ। और मेरा भाई काम पर चला जाता है। मैं स्कूल की छुट्टी के बाद घर की सफाई करता हूँ।

हम हमारी मम्मी जी को काम नहीं करने देते। घर का सारा काम करके फिर रात के आठ बजे मैं पढ़ाई करने बैठ जाता हूँ। एक घण्टे पढ़ाई करके हम सब सो जाते हैं। मैं मेरी मम्मीजी और बड़े भैया हैं। हमारे पिताजी नहीं हैं। हमारे पिताजी का स्वर्गवास सन् 1998 में हो गया था। हमें हमारे पिताजी की बहुत याद आती है। मुझे पिताजी की याद आती है तो कुएँ के सामने लगी पिताजी की तस्वीर को प्रणाम करता हूँ। और उनसे आशीर्वाद लेता हूँ।



● सुनिल कुमार वर्मा, सातवीं, चोली, खरगोन, म. प्र.



● देवकल्याणी, चौथी, राजनांदगाँव, म. प्र.



मेरा भला मोती

हमारे यहाँ एक कुतिया ने दो बच्चे दिए। दोनों बहुत अच्छे थे। एक काला और दूसरा सफेद। सफेद वाला बहुत कमजोर था इसलिए एक दो दिन में वह मर गया। हम लोगों ने काले वाले का नाम मोती रखा। वह हमारे मोहल्ले की रखवाली करता। सब लोग उसे खाने को देते। सब लोग उसे प्यार करते। लेकिन अब वह भी नहीं रहा। एक जीप वाले ने उसे कुचल दिया। हम लोगों को आज भी उसकी याद आती है।

● उर्वशी पटेल, छठवीं, सेमराकलाँ, भोपाल, म. प्र.

जब मैं अधीर हो गई

एक दिन हम लोग अपने पापाजी के साथ प्रातः घूमने पहाड़ी पर गए। पहाड़ी के नीचे कल-कल बहती नदी बड़ी सुहावनी लगती है। पापाजी ने हम लोगों को एक पेड़ की नीची डाल से झुलाया। झूला झूलकर मैं और मेरा भाई पेड़ के नीचे खेलने लगे। इतने में पापाजी आगे बढ़ गए। थोड़ी देर बाद हम लोगों ने देखा तो पापाजी नहीं दिखे। हम लोग घबरा गए। चारों तरफ पापाजी को खोजने लगे। छोटा भाई बोला, दीदी हम घर कैसे पहुँचेंगे? हम लोग घबरा कर रोने वाले ही थे कि पापाजी जोर से हँस पड़े। पापाजी को देखकर हम भी हँसने लगे। फिर हम खुशी-खुशी घर आ गए। घूमने में हम लोगों को बड़ा मज़ा आया।



● पूनम गुप्ता, शाहगढ़, सागर, म.प्र.

● चित्र : शिखा गोस्वामी, सातवीं, बैहर, बालाघाट, म. प्र.



● जितेन्द्र , सतवास, देवास, म. प्र.



● अक्षय वागेला, इन्दौर, म. प्र.

चार बहनें

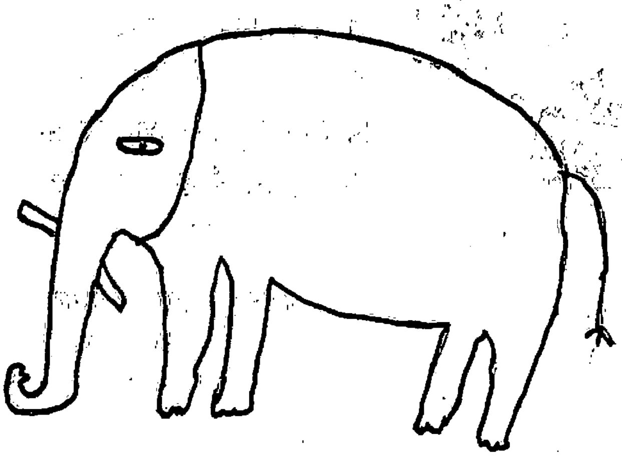
सीमा अपनी तीन छोटी बहनों के साथ घूमने निकली।

उनके घर से कुछ दूर ही सर्कस लगा हुआ था।

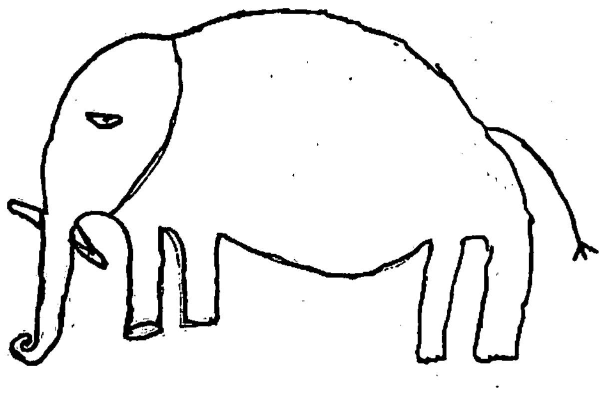
वहाँ उन्होंने एक जोकर देखा। वो बिल्ली के साथ खेल दिखाने की तैयारी कर रहा है।

थोड़ी दूर पर सर्कस के हाथी मस्ती में अपनी सूँड हिला-हिलाकर खाना खा रहे हैं।

सीमा ये सब देखने में ही खो गई। उसे याद ही नहीं रहा कि वो

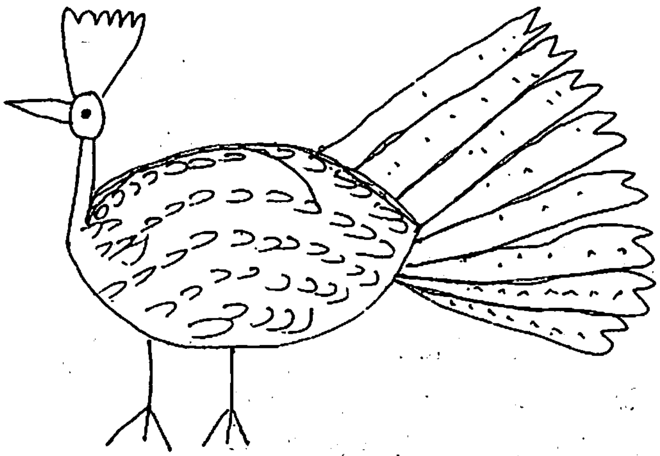


● श्याम पाटीदार, ठनगाँव



● अखिलेश कुशवाह, ठनगाँव





● कामिनी पंडित, सातवीं, मण्डलेश्वर, म. प्र.

अपनी तीन छोटी बहनों को साथ लाई थी।

जब उसे याद आया तो वह अपनी बहनों को ढूँढने निकली।

थोड़ी दूर जाने पर उसे एक सुन्दर मोर दिखाई दिया। लेकिन वह मोर को देखने के लिए नहीं रुकी। उसे तो अपनी बहनों को ढूँढना था।

सीमा जल्दी-जल्दी अपने घर की तरफ चल दी।

घर के पास पहुँचकर सीमा ने देखा कि सब्जीवाले दादा अपना ठेला लिए उसके घर के सामने ही खड़े हैं।

उन्होंने सीमा से कहा, ''बिटिया अपनी माँ से पूछ लो, सब्जी लेना है क्या?''

सीमा ने पूछा, ''मेरी छोटी बहनों को देखा है आपने?''

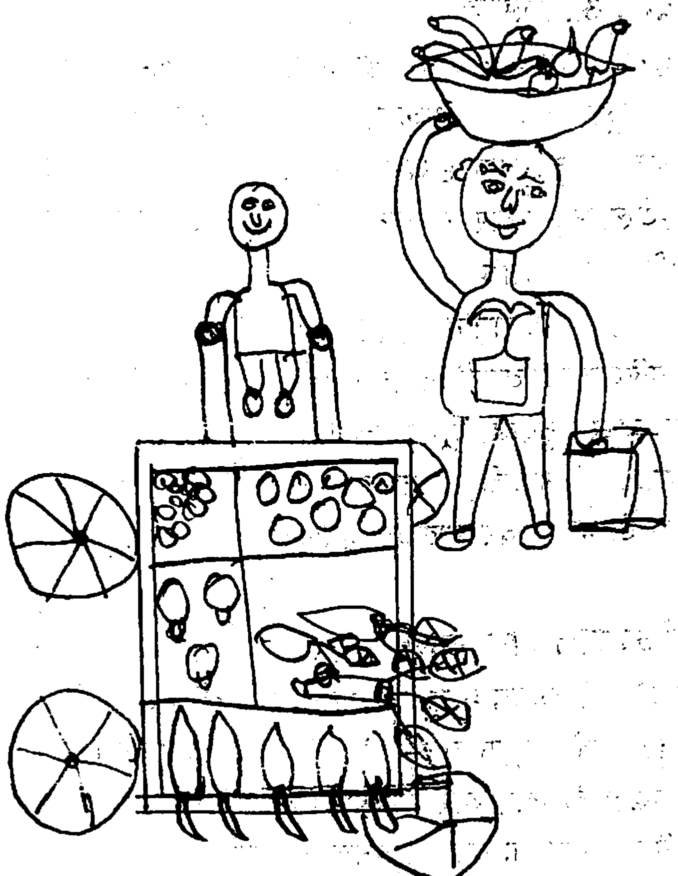
''हाँ क्यों नहीं, रोज़ ही तो देखते हैं।''

''नहीं, आज देखा है क्या, अभी?''

सब्जीवाले दादा ने कहा, ''हाँ अभी भी देख रहा हूँ। वो देखो तुम्हारे बाबा के साथ आ रही हैं।''

सीमा दौड़कर अपनी बहनों के पास पहुँच गई। चारों मिलकर फिर खेलने लगीं।

● कविता



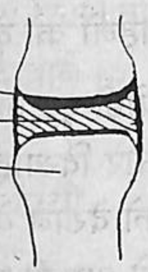
● दीपक शर्मा, पाँचवीं, दिल्ली



हमारी हड्डियाँ और जोड़

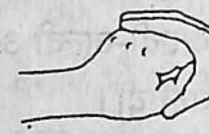
हमारा कंकाल हड्डियों का बना होता है। दो हड्डियाँ आपस में माँसपेशियों से जुड़ी होती हैं। जोड़ों के कारण ही हड्डियों के बीच चाल बनी रहती है। विभिन्न जोड़, अलग-अलग दिशाओं में चाल प्रदान करते हैं। हाथ-पैर और सभी जोड़, माँसपेशियों से ही चलते हैं। लेकिन माँसपेशियाँ केवल खींच सकती हैं – वे धक्का नहीं दे सकती हैं। इसलिए माँसपेशियाँ हमेशा विरोधी-जोड़ियों में ही काम करती हैं। माँसपेशियाँ कंकाल के हिस्सों को सहारा भी देती हैं। जोड़ों के कारण ही हड्डियों के सिरे घिसने से बचते हैं। हड्डी के सिरों पर एक कोमल-अस्थि (कार्टिलेज) होती है, जो थोड़ी स्प्रिंग जैसी होती है और एक शॉक-एब्जारबर का काम करती है। दो कार्टिलेज की तहों के बीच में, चिकनाई वाला साईनोवियल फ्लूइड (तरल) होता है। अपनी हड्डियों और जोड़ों के बारे में कुछ प्रयोग करके देखो।

बॉल और सॉकिट



कूल्हे के जोड़ के कारण ही हमारी जाँघ हिल-डुल पाती है। कूल्हे का जोड़ एक बॉल-सॉकिट जोड़ है। इसका अंदाज़ा तुम एक हाथ की मुट्ठी को दूसरे हाथ की हथेली में घुमाकर कर सकते हो। इसके लिए एक मॉडल भी बना सकते हो।

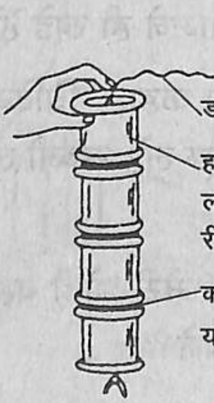
मॉडल बनाने के लिए बिजली का एक फ्यूज़ बल्ब, नारियल का बाहरी खोल (नट्टी) और एक लकड़ी का छोटा-सा टुकड़ा जुगाड़ लो। चित्र में दिखाए अनुसार नट्टी में लकड़ी का टुकड़ा फँसा लो। फिर बल्ब को नट्टी के अन्दर रखकर घुमाओ।





फिसलने वाले जोड़

हड्डियों के जोड़ों के कारण ही रीढ़ की हड्डी हिल-डुल पाती है। इसको तुम एक मॉडल बनाकर देखो। इस मॉडल के लिए डोर, डिब्बे या लकड़ी वाली धागे की रील, स्पंज या कार्ड इकट्ठा कर लो।



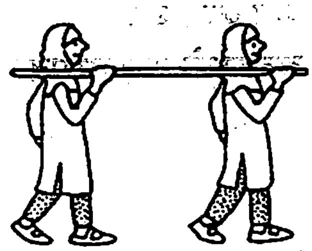
चित्र में दिखाए अनुसार धागे में एक रील उसके ऊपर एक टुकड़ा स्पंज या कार्डशीट रखो। फिर एक रील, एक टुकड़ा कार्डशीट। इस तरह तुम रीढ़ की हड्डी का मॉडल बना सकते हो।



रीढ़ की हड्डी को सहारा

ये चित्र रीढ़ और पैरों की स्थिति के बीच का सम्बंध स्पष्ट करते हैं।

तुम भी इसी तरह के प्रयोग अपने दोस्तों के साथ मिलकर कर सकते हो। दो समान ऊँचाई वाले दोस्त मिलकर एक लकड़ी या बाँस को अपने कंधे पर रखकर चलो। फिर थोड़ी और भारी चीज़ उठाकर चलकर देखो। रीढ़ की हड्डी पर भार बढ़ाने से जोड़ों पर क्या प्रभाव पड़ता है? सोचकर बताओ।
हरेक जानवर के शरीर के हाव-भाव और स्थिति बनाए रखने में माँसपेशियों का क्या रोल है? इस विषय पर अपने दोस्तों से चर्चा करो।



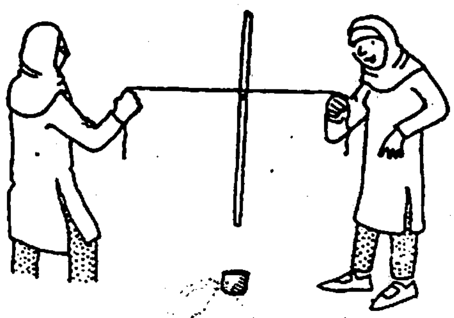
माँसपेशियाँ जोड़ी में काम करती हैं

शुरू में ही तुमने पढ़ा कि माँसपेशियाँ केवल खींच सकती हैं – वे धक्का नहीं दे सकती हैं। इसलिए माँसपेशियाँ हमेशा विरोधी–जोड़ियों में ही काम करती हैं। इसको देखने के लिए एक प्रयोग करते हैं।

छड़ी और रस्सी या मोटी डोरी ले आओ। ज़मीन पर एक छोटा डिब्बा रखो या ज़मीन पर एक निशान बना लो।

फिर चित्र में दिखाए अनुसार छड़ी को डोरी में फँसाकर लटकाओ। फिर दो दोस्तों से छड़ी को डिब्बे में डालने, या ज़मीन पर बने निशान से छूने को कहो।

क्या वो ऐसा कर पाए?



डोरी से छड़ी को केवल खींच सकते हैं उसे धक्का नहीं दे सकते हैं। माँसपेशियाँ भी केवल खींच सकती हैं।
यही प्रयोग तुम पेंसिल और धागे से भी कर सकते हो।

मूल विचार एवं चित्र : *वी. एस. ओ. हैण्डबुक फॉर साइंस टीचर्स* से साभार

गणित की पहेलियाँ



1.
घर पर थी
दीदी की शादी,
जाएँ चाचा मित्तल।
पाँच-पाँच
पत्तों वाली वे,
लाए दो सौ पत्तल।।
शादी में थे
बीस घराती,
बाराती कुल पचपन।
कितनी पत्तल
शेष बची थीं,
बतलाओ अब दरसन।।

2.
दीदी की
शादी में आए,
सजधज सोलह बाराती।
बाराती जन,
जो भी आए,
उनको गुजिया थी भातीं।।
चार-चार तो
बड़ों-बड़ों को,
मुनिया को दो दी जातीं।
आठ बड़े तब
शेष लड़कियाँ,
कुल कितनी गुजियाँ खातीं।।

3.
दो रुपए का
एक लिफाफा
मिलता था भई पहिले।
आज डाकघर
दे लिफाफा
तीन नगद ले पहिले।।
दस रुपए दे
मुनिया रानी,
माँगे पाँच लिफाफे।
कितने शेष
और फिर देकर,
मुनिया गहे लिफाफे।



● गोपीचन्द श्रीनागर
● चित्र : सौरभ दास

धारावाहिक : नौवीं किश्त

प्यारा कुनबा



निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। उसे मुर्गी-पालन नाम की एक किताब मिलती है। वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है।

वे गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ करते हैं। और फिर शुरुआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। इसमें एक बड़ा काम था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं और अण्डों की देखभाल करते हैं।

एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीश्का के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे मेंपता चल जाता है। एक दिन दोनों दोस्त स्कूल जाते समय माया से इन्क्यूबेटर की देखभाल करने को कहते हैं, वो मान जाती है। स्कूल में मीश्का को इन्क्यूबेटर की चिंता होती रहती है। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है दोनों घर की ओर भागते हैं। घर जाकर देखते हैं सब ठीक है।

रात-रात भर जागकर इन्क्यूबेटर की देखभाल करने के कारण मीश्का को हर कभी और हर कहीं नींद आ जाती थी। और, जब मीश्का सो रहा होता तो कोल्या उसकी तस्वीर बनाता। मीश्का की सोते हुए की तस्वीर कोल्या ने अपनी कक्षा के लड़कों को दिखाई तो उन्होंने मीश्का की बहुत हँसी उड़ाई। मीश्का ने गुस्सा होकर कोल्या से कहा कि अब से इन्क्यूबेटर की देखभाल तुम करो।

कुछ दिन कोल्या ने देखभाल की। इसी दौरान एक बार ताप बहुत नीचे चला गया। पर जल्द ही उसने ताप को सही स्थिति में पहुँचा दिया। लेकिन उसने यह बात किसी को बताई नहीं। पर उसे मन में यह ज़रूर लगता रहा कि अब अण्डों में से चूज़े नहीं निकलेंगे। अब आगे . . . .

पायोनियर सभा

कोस्त्या हमसे मिलने रोज़ आता था और फिर जाकर साथियों को बताता कि अण्डे किस तरह सेये जा रहे हैं। बेशक उसने यह नहीं बताया था कि मीश्का और मैं ही वे लड़के हैं, जिन्होंने इन्क्यूबेटर बनाया है। उसने कुछ इस तरह गढ़ रखा था कि वे लड़के किसी दूसरे स्कूल में पढ़ते हैं।

"मैं उन लड़कों से मिलना चाहता हूँ," वीत्या स्मिर्नोवा ने एक दिन कहा।

"भला, किसलिए?"

"वे लोग दिलचस्प लगते हैं। काश, हमारे प्रकृति-प्रेमी मंडल में भी ऐसे ही लड़के हों! हम भी सब कुछ बड़ी अच्छी तरह कर सकते थे, लेकिन मीशा और कोल्या जैसे लड़कों के साथ कुछ भी नहीं किया जा सकता। वे कुछ भी काम करना नहीं चाहते। उन्होंने पेड़-पौधे लगाने में कुछ सहायता नहीं दी और अब वे पंछी-घर भी नहीं बना रहे हैं...."

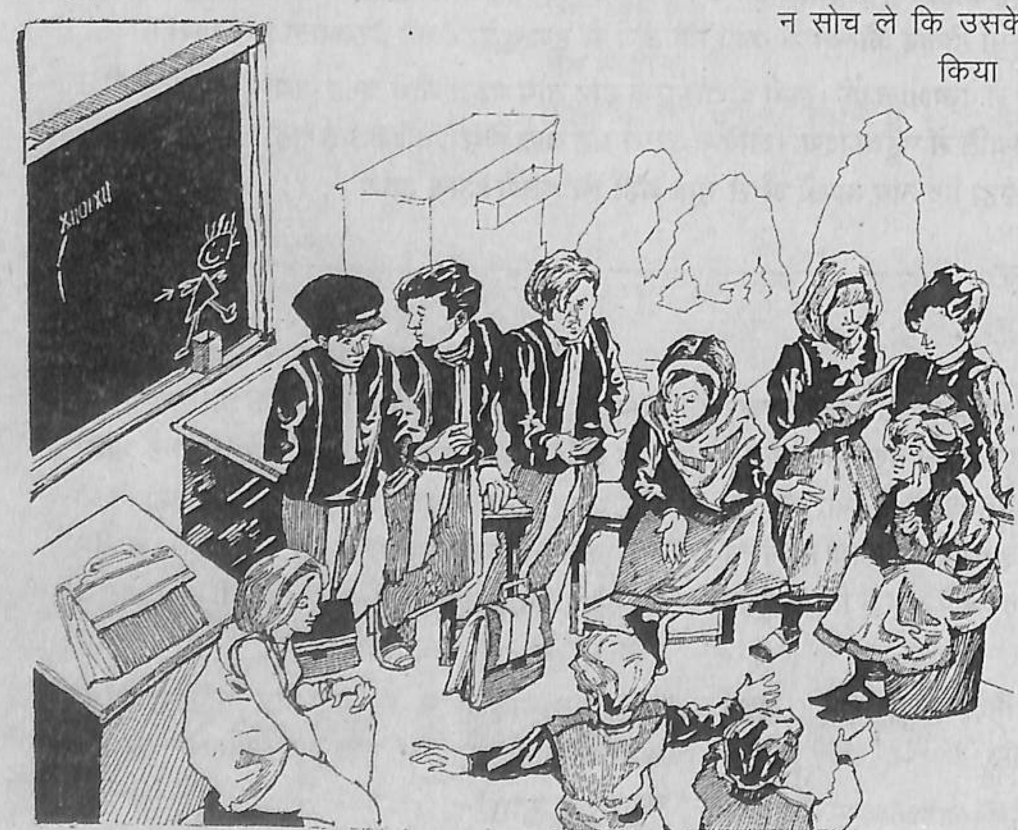
"उन लड़कों ने भी पेड़-पौधे नहीं लगाए," कोस्त्या ने मीश्का और मेरी ओर आँख मारते हुए कहा।

''हाँ, लेकिन उनकी बात दूसरी है। वे और काम में तो लगे हुए हैं।''

वीत्या को कभी ख्याल भी नहीं आया कि जिन लड़कों के बारे में कोस्त्या बता रहा है, वे हम ही हैं। और सचमुच ही हमें बहुत काम करना पड़ता था। इस इन्क्यूबेटर की वजह से हम पढ़ाई पर भी ध्यान न दे पा रहे थे और नतीजे के तौर पर हम दोनों को अंकगणित में पाँच में से दो ही नंबर मिले।

अलेक्सांद्र येफ्रेमोविच ने मुझसे ब्लैक बोर्ड पर एक सवाल हल करने को कहा। मैं नहीं कर सका, इसलिए उन्होंने मुझे दो नंबर दिए। इसके बाद उन्होंने मीश्का को बुलाया और उसे 2+ नंबर दिए। हम थे भी इसी के लायक। क्योंकि हमने ज़रा भी पढ़ाई नहीं की थी। लेकिन फिर भी इतने बुरे नंबर पाना अफसोस की बात थी।

''तुम्हारी बात इतनी बुरी नहीं है,'' मीश्का बोला। ''तुम्हें सिर्फ 2 नंबर मिले हैं, लेकिन मुझे तो 2+ मिले हैं।''



''अरे बुद्धू, 2+, दो से ज़्यादा होता है,'' मैंने कहा।

''बकवास! 2+ का अर्थ तीन थोड़े ही होता है, या होता है?''

''हाँ, है तो वह 2 के ही बराबर।''

''फिर '+' किसलिए है?''

''मुझे पता नहीं।''

''मैं बताता हूँ। दो नंबर हमें ज़्यादा न खलें, इसलिए उसके आगे '+' लगा दिया जाता है। यह ऐसा ही है, जैसे कह दिया जाए – लो तुम्हें एक सुन्दर–सा '+' दे दिया। लेकिन दो तो दो ही रहता है न? इसी से बुरा लगता है।''

''भला, क्यों?''

''कारण कि इससे हमारी मूर्खता सिद्ध होती है। देखो, अगर हम मूर्ख नहीं होते, तो केवल दो नंबर यह दिखाने को काफी होते कि हम कुछ जानते ही नहीं हैं। लेकिन मूर्ख को 2+ दिए जाएँगे, जिससे वह यह न सोच ले कि उसके साथ ठीक बर्ताव नहीं किया गया। लेकिन मैं मूर्ख कहलाना नहीं चाहता हूँ। कभी 2– नंबर भी मिल सकते हैं,'' वह कहता गया। ''इसमें मुझे कोई तुक नहीं दिखाई देती। दो नंबर मिलने का अर्थ ही यह है कि हम कुछ नहीं जानते। लेकिन कुछ नहीं से भी कम क्या जानोगे?''

''बिल्कुल ठीक है,'' मैंने कहा।

''यही तो मुझे कहना है!'' मीश्का

बोला। ''2– का मतलब है कि तुम कुछ नहीं जानते और न जानना ही चाहते हो। अगर तुमने कुछ पढ़ाई ही नहीं की, तो तुम्हें दो ही नंबर मिलेंगे। लेकिन अगर तुम आलसी हो, बदनाम हो, तो तुम्हें '2–' ही दिए जाएँगे, जिससे तुम्हें कुछ महसूस हो। मिलने को तो एक नंबर भी मिल सकता है,'' वह उसी रौ में कहता ही गया।

लेकिन वह और कुछ कह नहीं पाया, क्योंकि तभी अलेक्सांद्र येफ्रेमोविच ने हमें अलग बिठा दिया। आखिरी छुट्टी के समय जेन्या स्कवोर्त्सोव ने कहा, ''पढ़ाई खत्म होने के बाद रुक जाना। हमारी सभा होगी।''

''ओह, लेकिन हम बिल्कुल नहीं रुक सकते, हमें फुर्सत नहीं है,'' मीश्का ने और मैंने बताया।

''तुम्हें रुकना होगा,'' जेन्या बोला, ''क्योंकि तुम दोनों के बारे में ही तो हमें चर्चा करनी है।''

''क्यों, हमने क्या किया?''

''सभा में तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा।'' जेन्या ने बस इतना ही कहा।

''क्या खूब!'' मीश्का बोला। ''हमें बुरे नंबर क्या मिले कि ये सभा करने जा रहे हैं। वह सोचता है कि टोली का नायक होने के कारण वह हर किसी के बारे में सभा कर सकता है। ज़रा ठहरो, जब खुद उसे ही दो नंबर मिलें, तब देखेंगे कि यह जनाब सभा करते हैं या नहीं!''

''उसको दो नंबर कभी नहीं मिलेंगे, वह लगकर पढ़ाई करता है,'' मैंने कहा।

''तुम क्यों उसकी तरफदारी कर रहे हो?''

''मैं किसी की तरफदारी नहीं करता।''

''जाने दो यार, लेकिन अब हमें सभा में जो जाना पड़ेगा,'' मीश्का बुदबुदाया।

''कोई बात नहीं,'' मैंने कहा। ''माया इन्क्यूबेटर की निगरानी कर रही है।'' हम सभा के लिए ठहर गए।

''आज हम नंबरों और आचरण के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं,'' जेन्या स्कवोर्त्सोव ने कहना शुरू किया। ''आजकल कुछ लड़के क्लास मे बुरा आचरण कर रहे हैं। वे एक दूसरे के साथ कुलबुलाहट करते हैं, गप्पें लगाते हैं और दूसरों के काम में दखल देते हैं। मीशा और कोल्या ही सबसे बड़े अपराधी हैं। गप्पें लगाने के कारण इन दोनों को कई बार अलग बिठाना पड़ा है। यह नहीं चलेगा। यह बहुत ही बुरा है। और आज इस सबके ऊपर इन दोनों को सिर्फ दो नंबर मिले।''

''हम दोनों को एक ही से नंबर नहीं मिले। मुझे 2+ मिले हैं,'' मीश्का बोला।

''इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता,'' जेन्या ने कहा। ''तुम दोनों को दूसरे विषयों में भी ज़्यादा बुरे नंबर मिल रहे हैं।''

''दूसरे किसी भी विषय में हमें दो नंबर नहीं मिले, और मुझे सिर्फ रूसी में तीन नंबर मिले हैं,'' मीश्का बोला।

''नहीं, इसको '3–' नंबर मिले हैं,'' वान्या लोज्किन बोल उठा।

''तुम बीच में टाँग मत अड़ाओ,'' मीश्का ने कहा।

''क्यों नहीं, यह पायोनियरों की सभा है। जो चाहूँ, सो कहने का मुझे अधिकार है।''

''तुम्हें पहले इजाज़त लेनी चाहिए।''

''ठीक है, मैं इजाज़त माँगता हूँ। दोस्तो, सच कहूँ, तो ये दोनों जने आजकल किसी कारण होमवर्क बिल्कुल नहीं करते और इसलिए इनको कम नंबर मिल रहे हैं। इनसे पूछा जाए कि यह कारण क्या हैं।''

''बिल्कुल ठीक, बताओ क्या बात है? यह जानने का हमें अधिकार है,'' जेन्या ने कहा।

''कोई कारण नहीं है,'' मीश्का ने उत्तर दिया।

''मैं जानता हूँ कि क्या बात है,'' त्योशा कूरोच्किन बोला। ''क्लास में सारा समय ये बोलते रहते हैं और अध्यापक की ओर ध्यान नहीं देते; इतना ही नहीं, घर पर भी ये पढ़ाई नहीं करते। मेरी राय में इनकी बड़बड़ बन्द करने के लिए इन्हें सदा के लिए अलग कर देना चाहिए।''

"तुम हमें अलग नहीं कर सकते," मीश्का बोला। "हम दोनों मित्र हैं। तुम किसी भी तरह मित्रों को अलग नहीं कर सकते, या कर सकते हो?"

"अगर मित्र होने से सिर्फ नुकसान ही पहुँचता हो, तो ऐसा करना ही सबसे अच्छा है," सेन्या बोब्रोव ने कहा।

इसी समय कोस्त्या हमारे बचाव के लिए खड़ा हुआ। "आज तक कभी किसी ने सुना है कि दोस्ती से भी किसी का नुकसान हो जाता है?" उसने पूछा।

"इनकी दोस्ती से होता है, क्योंकि ये हर चीज़ में एक-दूसरे की नकल करते हैं। अगर एक बोलने लगा, तो दूसरा भी बोलेगा, एक अपनी पढ़ाई नहीं करना चाहता, तो दूसरा भी नहीं करेगा। अगर एक को दो नंबर मिले, तो दूसरे को भी उतने ही मिलेंगे। जी नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। इन दोनों को अलग करना ही होगा, यह बात है!" वीत्या स्मिर्नोव ने कहा।

"एक मिनट," कोस्त्या बोला। "हम उनको जब चाहें अलग कर सकते हैं। लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि क्या इनकी मदद की जा सकती है। मान लो कि उनके पास पढ़ाई के लिए समय ही नहीं बचता है, तो?"

"क्या कहते हो, पढ़ाई के लिए समय नहीं बचता?"

"हाँ, मान लो कि ये किसी बहुत बड़े काम में लगे हुए हैं।"

इस पर सेन्या बोब्रोव हँस पड़ा। "बड़े काम में? यह क्या हो सकता है?"

"मान लो कि ये एक इन्क्यूबेटर बना रहे हैं।"

"इन्क्यूबेटर?" सेन्या फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

"हाँ, इन्क्यूबेटर। ज़रा सोचो, क्या यह कोई आसान काम है? क्या तुम्हें मालूम है कि ताप का ध्यान रखने के लिए ये रात-रात भर जागते रहते हैं? शायद उधर ये दिन-रात परिश्रम करते हैं और इधर हम उनको झिड़कियाँ सुनाते हैं। हो सकता है कि....."

"मैं भी जानूँ कि यह भेद की बात है क्या," गुस्से में आते हुए जेन्या ने कहा। "क्या इन्होंने सचमुच ही इन्क्यूबेटर बनाया है?"

"हाँ," कोस्त्या ने कहा।

"तुमने जिन लड़कों का ज़िक्र किया था, इन्होंने उनकी नकल की है।" वीत्या बोला।

"नहीं," कोस्त्या ने कहा। "इन्होंने किसी की भी नकल नहीं की है, ये वही लड़के हैं, जिनके बारे में मैंने बताया था।"

"क्या?"

"हाँ, यही बात है।"

"लेकिन, लेकिन तुमने तो कहा था कि वे किसी दूसरे स्कूल के लड़के हैं।"

"मैंने ऐसे ही मज़ाक में कहा था।"

सब लड़कों ने मीश्का को और मुझे घेर लिया।

"तो तुमने खुद ही इन्क्यूबेटर बनाया है?"

और वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "यह बड़ी शर्म की बात है! सच्चे प्रकृति-प्रेमी कभी ऐसा नहीं करते। इन्क्यूबेटर के बारे में तुमने चुप्पी क्यों साध ली! क्या तुमने नहीं सोचा कि ऐसी बात में हमें भी दिलचस्पी होगी? क्यों तुमने यह बात छिपाकर रखी?"

"हमने सोचा कि तुम हमारी खिल्ली उड़ाओगे," हमने कहा।

"भला खिल्ली क्यों उड़ाते? इसमें मज़ाक की बात क्या है? उलटे हमने तुम्हारी मदद ही की होती। हम बारी-बारी से ताप पर ध्यान रख लेते। तुम्हें आराम मिल जाता और अपने सबक तैयार करने के लिए समय भी मिल जाता।"

"मित्रो," वादिक जैत्सेव ने कहा। "इस इन्क्यूबेटर के काम में हमें भी हाथ बटाना चाहिए।"

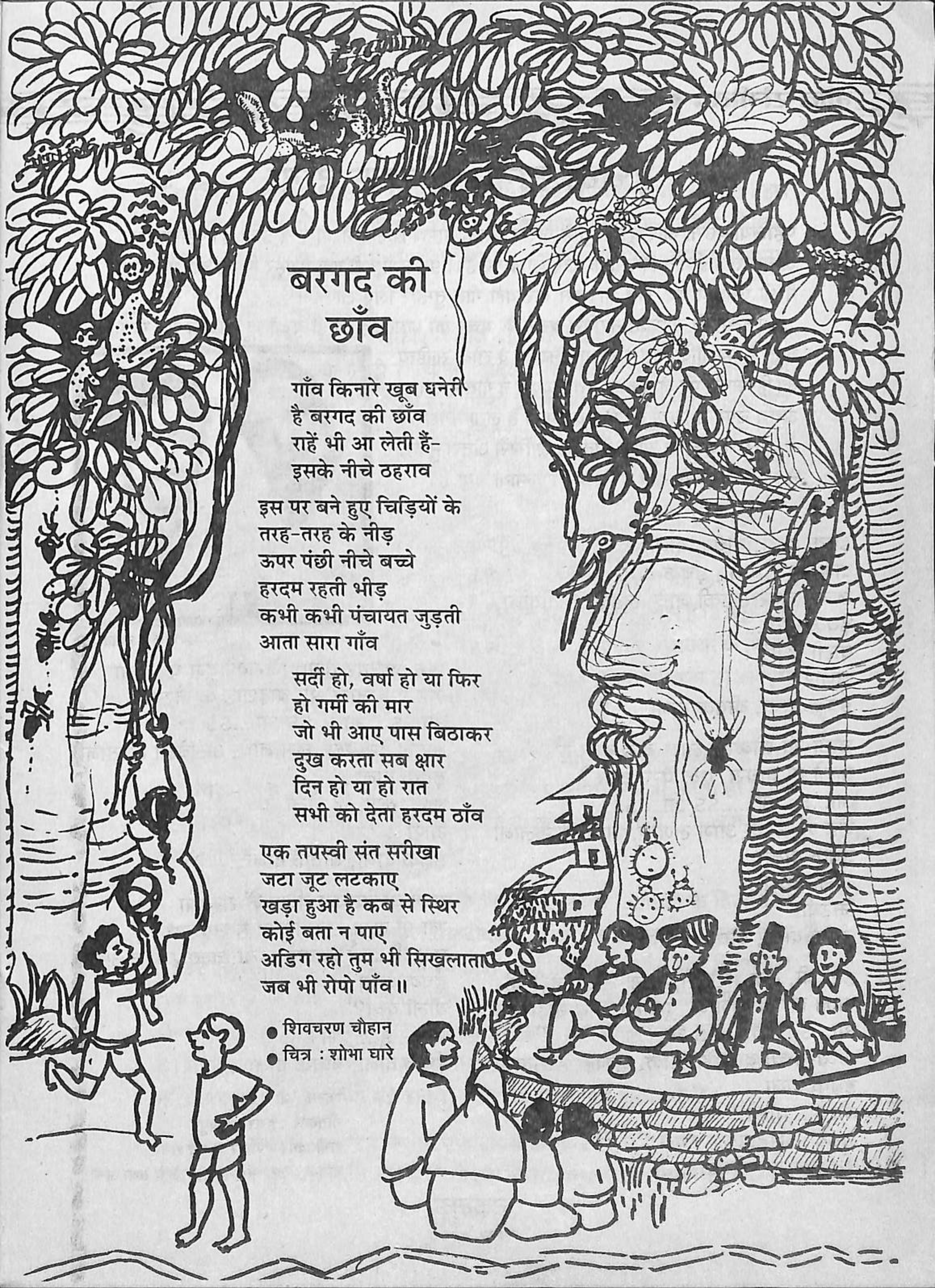
"बिल्कुल ठीक!" सब लड़के चिल्लाए।

वीत्या ने बताया कि खाने के बाद वह हमारे यहाँ आएगा और फिर हम हर किसी को बारी देने का टाइम-टेबल बना लेंगे।

इसके बाद सभा समाप्त हुई।

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास



बरगद की छाँव

गाँव किनारे खूब घनेरी
है बरगद की छाँव
राहें भी आ लेती हैं-
इसके नीचे ठहराव

इस पर बने हुए चिड़ियों के
तरह-तरह के नीड़
ऊपर पंछी नीचे बच्चे
हरदम रहती भीड़
कभी कभी पंचायत जुड़ती
आता सारा गाँव

सर्दी हो, वर्षा हो या फिर
हो गर्मी की मार
जो भी आए पास बिठाकर
दुख करता सब क्षार
दिन हो या हो रात
सभी को देता हरदम ठाँव

एक तपस्वी संत सरीखा
जटा जूट लटकाए
खड़ा हुआ है कब से स्थिर
कोई बता न पाए
अडिग रहो तुम भी सिखलाता
जब भी रोपो पाँव॥

- शिवचरण चौहान
- चित्र : शोभा घारे

ईचक दाना, बीचक दाना

पहेलियाँ पूछना और बूझना तुम्हें ज़रूर पसन्द होगा। फिल्मों में भी ऐसा होता है। पहेलियों पर आधारित कई गीत फिल्मों के लिए लिखे गए हैं।1 955 में बनी एक मशहूर फिल्म **चार सौ बीस** में भी ऐसा ही एक गीत था। इस बार यही गीत तुम्हारे लिए लाए हैं।

फिल्म की नायिका नरगिस बस्ती के बच्चों को पढ़ाती हैं। इन्हीं बच्चों के साथ वे यह गीत गाती हैं। हालाँकि गीत में जो पहेलियाँ हैं वे लोक साहित्य का हिस्सा हैं, पर लेखक हसरत जयपुरी ने गीत में उनका अच्छा उपयोग किया है। गीत को गाया है लता मंगेशकर ने, अन्य गायकों के साथ। गीत का आखिरी अंतरा मुकेश ने गाया है, जिसे राज कपूर पर फिल्माया गया है।



शंकर जयकिशन

ईचक दाना, बीचक दाना
दाने ऊपर दाना, ईचक दाना
छज्जे ऊपर लड़की नाचे, लड़का है दीवाना
ईचक दाना...
बोलो क्या?
अनार!
ईचक दाना, बीचक दाना...

छोटी-सी छोकरी, लाल बाई नाम है
पहने वो घाघरा, एक पैसा दाम है
आ...S....आ.....SS आ....SS
मुँह में सबके आग लगाए, आता है रुलाना
ईचक दाना....
बोलो क्या?
मिरची!
ईचक दाना, बीचक दाना....

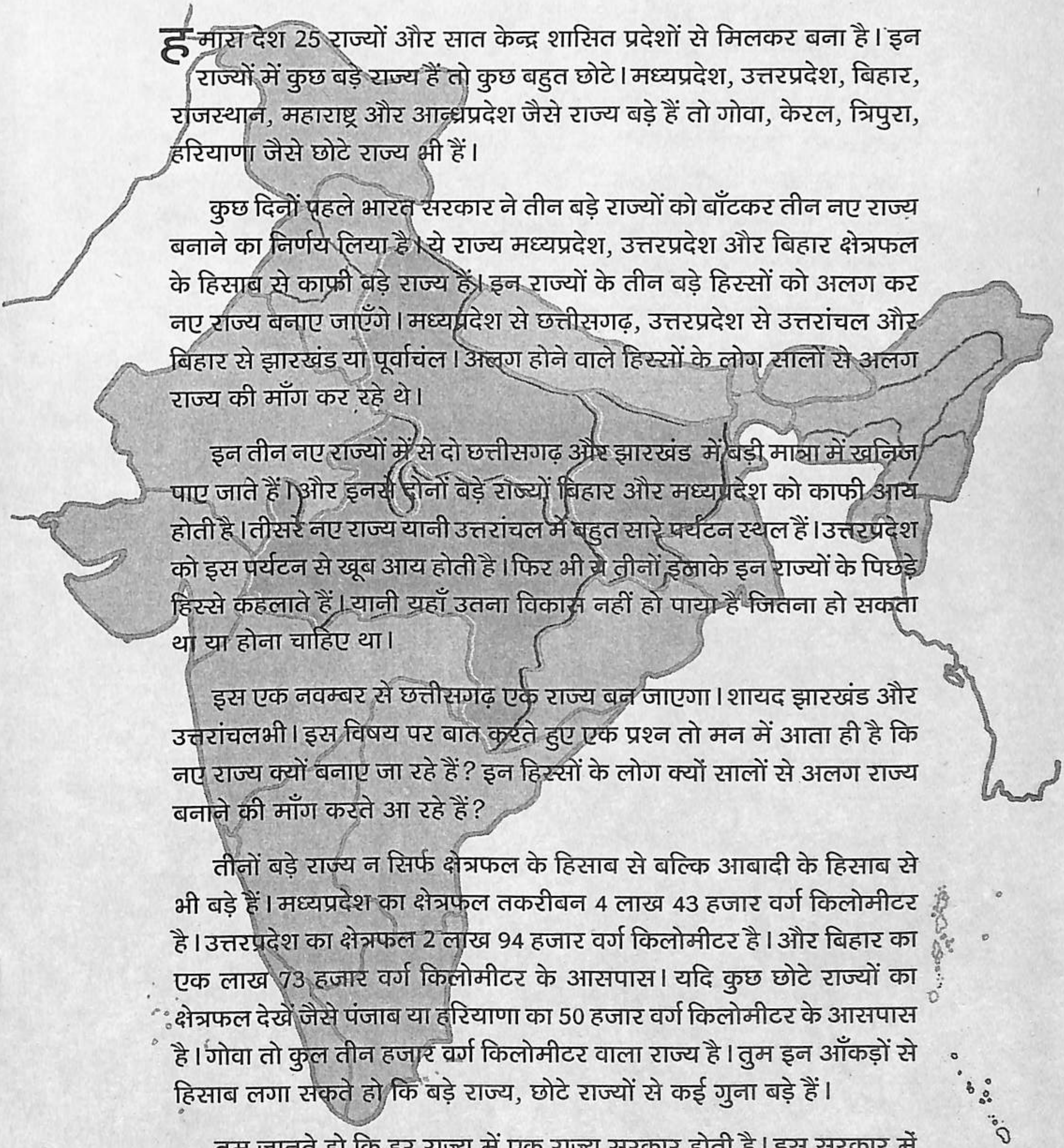
हरी थी, मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी
राजा जी के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ी थी
आ...S....आ.....SS आ....SS
कच्चे-पक्के बाल हैं उसके, मुखड़ा है सुहाना
ईचक दाना....
बोलो... बोलो?
भुट्टी....भुट्टा!
ईचक दाना, बीचक दाना....

एक जानवर ऐसा, जिसकी दुम पर पैसा
सर पे है ताज भी, बादशाह के जैसा
आ...S....आ.....SS आ....SS
बादल देखे छम छम नाचे, अलबेला मस्ताना
ईचक दाना....
बोलो क्या...? बोलो न!
मोर!
ईचक दाना, बीचक दाना...

चालें वो चलकर, दिल में समाया
खा पी गया सब, किया है सफाया
तुम भी देखो बचकर रहना, चक्कर में न आना
ईचक दाना....
बोलो क्या?
गम... हुँ.....हम।
ईचक दाना, बीचक दाना.....

फिल्म : श्री 420
गीतकार : हसरत जयपुरी
संगीतकार : शंकर जयकिशन
गायक : लता मंगेशकर, मुकेश तथा अन्य

नए राज्य



हमारा देश 25 राज्यों और सात केन्द्र शासित प्रदेशों से मिलकर बना है। इन राज्यों में कुछ बड़े राज्य हैं तो कुछ बहुत छोटे। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेश जैसे राज्य बड़े हैं तो गोवा, केरल, त्रिपुरा, हरियाणा जैसे छोटे राज्य भी हैं।

कुछ दिनों पहले भारत सरकार ने तीन बड़े राज्यों को बाँटकर तीन नए राज्य बनाने का निर्णय लिया है। ये राज्य मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और बिहार क्षेत्रफल के हिसाब से काफी बड़े राज्य हैं। इन राज्यों के तीन बड़े हिस्सों को अलग कर नए राज्य बनाए जाएँगे। मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश से उत्तरांचल और बिहार से झारखंड या पूर्वांचल। अलग होने वाले हिस्सों के लोग सालों से अलग राज्य की माँग कर रहे थे।

इन तीन नए राज्यों में से दो छत्तीसगढ़ और झारखंड में बड़ी मात्रा में खनिज पाए जाते हैं। और इनसे दोनों बड़े राज्यों बिहार और मध्यप्रदेश को काफी आय होती है। तीसरे नए राज्य यानी उत्तरांचल में बहुत सारे पर्यटन स्थल हैं। उत्तरप्रदेश को इस पर्यटन से खूब आय होती है। फिर भी ये तीनों इलाके इन राज्यों के पिछड़े हिस्से कहलाते हैं। यानी यहाँ उतना विकास नहीं हो पाया है जितना हो सकता था या होना चाहिए था।

इस एक नवम्बर से छत्तीसगढ़ एक राज्य बन जाएगा। शायद झारखंड और उत्तरांचलभी। इस विषय पर बात करते हुए एक प्रश्न तो मन में आता ही है कि नए राज्य क्यों बनाए जा रहे हैं? इन हिस्सों के लोग क्यों सालों से अलग राज्य बनाने की माँग करते आ रहे हैं?

तीनों बड़े राज्य न सिर्फ क्षेत्रफल के हिसाब से बल्कि आबादी के हिसाब से भी बड़े हैं। मध्यप्रदेश का क्षेत्रफल तकरीबन 4 लाख 43 हजार वर्ग किलोमीटर है। उत्तरप्रदेश का क्षेत्रफल 2 लाख 94 हजार वर्ग किलोमीटर है। और बिहार का एक लाख 73 हजार वर्ग किलोमीटर के आसपास। यदि कुछ छोटे राज्यों का क्षेत्रफल देखें जैसे पंजाब या हरियाणा का 50 हजार वर्ग किलोमीटर के आसपास है। गोवा तो कुल तीन हजार वर्ग किलोमीटर वाला राज्य है। तुम इन आँकड़ों से हिसाब लगा सकते हो कि बड़े राज्य, छोटे राज्यों से कई गुना बड़े हैं।

तुम जानते हो कि हर राज्य में एक राज्य सरकार होती है। इस सरकार में जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं जिन्हें हम विधायक कहते हैं। राज्य की सरकार

वहाँ के रहने वाले लोगों के लिए आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था करती है, उनकी समस्याएँ सुलझाती है, कानून बनाती है, वहाँ कानून लागू करवाती है।

राज्य सरकार को वहाँ के लोगों से कर के रूप में पैसा मिलता है। वहाँ के कारखानों, खनिजों, पर्यटन आदि से जो आय होती है उसका एक बड़ा हिस्सा, उस राज्य के लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने में लगता है। तुम्हारे गाँव के स्कूल, नहर, सड़क, स्वास्थ्य केन्द्र या फिर उचित मूल्य की दुकान सब का इंतजाम सरकार करवाती है।

बड़े राज्यों में राज्य सरकार को बड़े हिस्से में रहने वाले लोगों का ध्यान रखना पड़ता है। राज्य की प्रशासनिक टीम को बड़े हिस्से की व्यवस्थाएँ देखनी पड़ती हैं। समस्याएँ बस यहीं से शुरू होती हैं। बड़े राज्यों में राजधानी के आसपास के क्षेत्र में तो व्यवस्थाएँ ठीक-ठाक रहती हैं लेकिन दूरदराज के क्षेत्रों में सरकार उतना ध्यान नहीं दे पाती है। जिससे वहाँ कई समस्याएँ बनी रहती हैं।

इन समस्याओं के रहते वहाँ के लोगों की तरक्की नहीं हो पाती। वहाँ के लोगों को अपनी समस्याएँ सरकार तक पहुँचाने में बहुत मुश्किलें आती हैं। राजधानी से उनका क्षेत्र काफी दूर होता है अपने क्षेत्र से हजार किलोमीटर दूर आने जाने के लिए उनके पास स्रोत नहीं होते हैं। वहाँ किए गए धरने, प्रदर्शन भी उनकी समस्याओं को सरकार तक प्रभावी ढंग से नहीं पहुँचा सकते हैं। इस तरह कई बार उनकी समस्याएँ हल होते-होते रह जाती हैं।

इस तरह जब किसी बड़े राज्य के दूरवर्ती क्षेत्र को अलग करके एक राज्य बनाया जाता है तो उस क्षेत्र की कई समस्याएँ आसानी से हल होंगी, ऐसी सम्भावना बनती है। वहाँ के लोगों को अपनी राजधानी से होने वाले कामों के लिए हज़ारों किलोमीटर की दौड़धूप नहीं करनी पड़ती है। उनकी सरकार तक पहुँच कुछ आसान हो जाती है। दायरा कम होने से सरकार पूरे क्षेत्र पर नजर रख पाती है। अब उस क्षेत्र के लिए एक पूरा प्रशासनिक अमला होता है जो वहाँ के लोगों का ध्यान रखता है। छोटे क्षेत्र में सरकार को अपनी नीतियाँ बनाने में भी मदद मिलती है। क्योंकि छोटे क्षेत्र के लोगों की समस्याएँ, उनके धंधे, उनके सरोकार लगभग समान होते हैं। जबकि एक बड़े राज्य में सरकार अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों को ध्यान में रखकर एक मिलीजुली नीति बनाती है। छोटे राज्यों के लोगों को हर क्षेत्र में अधिक मौके मिलते हैं, चाहे वह शिक्षा की बात हो, रोज़गार के अवसरों की बात हो या फिर खेलों की।

शायद इन सब फायदों के लिए ही तीनों क्षेत्रों के लोग चाहते थे कि उनके क्षेत्र को अलग राज्य बना दिया जाए। ताकि उनके क्षेत्र का शासन उनके हाथ में हो।

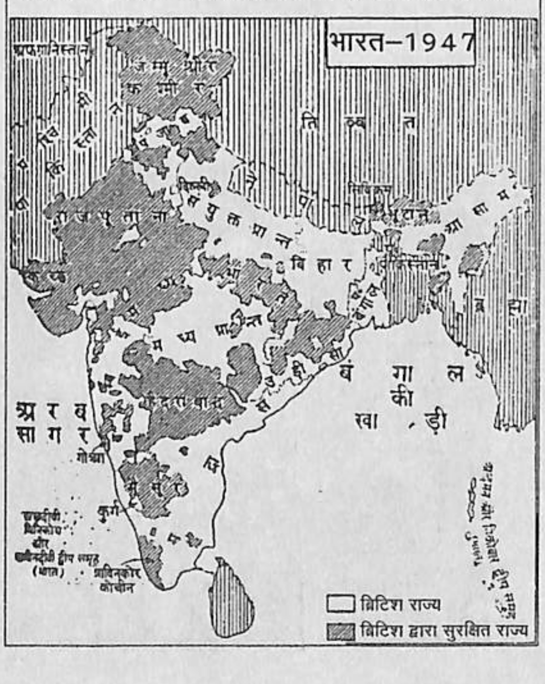
ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है। इससे पहले भी कई बार नए राज्य बने हैं। सबसे पहले भाषाई आधार पर असम, उड़ीसा, बिहार का पुनर्गठन किया गया था। उसके बाद और राज्य बने। तेलुगूभाषियों ने अपने लिए अलग राज्य की माँग की और 1953 में आंध्रप्रदेश बना। फिर 1956 में चौदह राज्यों का पुनर्गठन किया गया। इनमें मध्यप्रदेश भी एक था। इसके बाद इक्के-दुक्के राज्य बनते रहे। तीनों राज्य बनने के बाद अब हमारे देश में राज्यों की संख्या 28 हो जाएगी।

राज्य पहले भी बने, इस उद्देश्य से कि छोटे राज्य बनने से प्रशासन दुरुस्त होगा। समस्याएँ कम होंगी। लेकिन इस सबके बावजूद आज राज्यों की स्थिति हमारे सामने हैं।

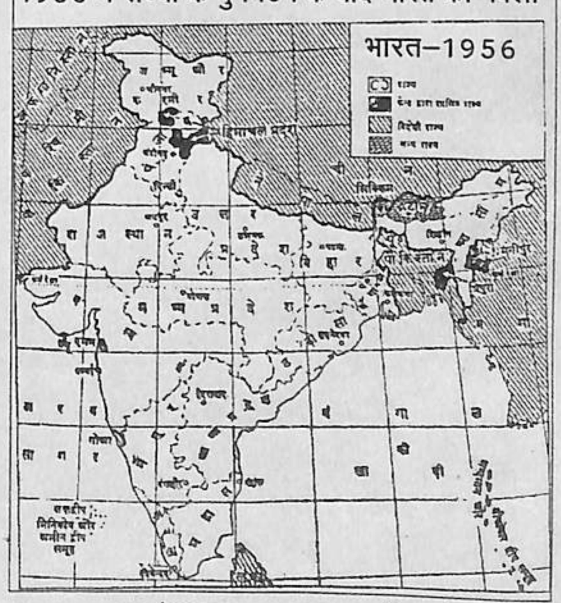
फिर तीन नए राज्य बनने जा रहे हैं। इस उद्देश्य के साथ कि वहाँ के लोगों की समस्याएँ कम होंगी। उस क्षेत्र का विकास होगा। तुम क्या सोचते हो? क्या सिर्फ अलग राज्य बन जाने से मुसीबतें कम हो जाएँगी?

● सुशील शुक्ल

1947 में भारत–पाकिस्तान बनने के बाद का नक्शा



1956 में राज्यों के पुनर्गठन के बाद भारत का नक्शा



नक्शे 'भारत का बृहत भूगोल' से साभार।

छत्तीसगढ़

1. **क्षेत्रफल** : 1 लाख 35 हजार वर्ग किलोमीटर
2. **जनसंख्या** : लगभग 2 करोड़ (पुरुष : लगभग 98 लाख, स्त्री : 1 करोड़, 2 लाख)
3. **राजधानी** : रायपुर
4. **जिले** : 16 (कोरिया, सरगुजा, बिलासपुर, जशपुर, कोरबा, कवर्धा, जाँजगीर, रामगढ़, राजनांदगाँव, दुर्ग, रायपुर, महासमुंद, धमतरी, कांकेर, बस्तर, दंतेवाड़ा।)
5. **विधानसभा में कुल प्रतिनिधियों की संख्या** : 90
6. **राज्य की आय के स्रोत** : चूना पत्थर, लौह खनिज, हीरा, कोयला, चावल, तेंदूपत्ता और कई वन उत्पाद।
7. **नदियाँ** : महानदी, गोदावरी, नर्मदा, इंद्रावती।
8. **साक्षरता** : 35 प्रतिशत



झारखंड या पूर्वांचल

1. **क्षेत्रफल** : 74677 वर्ग किलोमीटर
2. **जनसंख्या** : 2.18 करोड़
3. **राजधानी** : रांची (प्रस्तावित)
4. **जिले** : 18 (बोकारो, चतरा, देवधर, धनबाद, दुमका, गढ़वा, गिरिडीह, गोड्डा, गुमला, हजारीबाग, कोडरमा, लोहरदगा, पाकुड़, पलामू, रांची, साहबगंज, सिंहभूम (पूर्व)
5. **विधानसभा में कुल प्रतिनिधियों की संख्या** : 82



6. **राज्य की आय के स्रोत** : खनिज, लोहा इस्पात
7. **साक्षरता** : 33%

उत्तरांचल

1. **क्षेत्रफल** : 51125 वर्ग किलोमीटर
2. **जनसंख्या** : 1 करोड़ (लगभग)
3. **राजधानी** : नैनीताल या देहरादून (प्रस्तावित)
4. **जिले** : 13 (पौड़ीगढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तरकांशी, चमोली, देहरादून, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, ऊधमसिंह नगर, बागेश्वर, चम्पावत, रुद्रप्रयाग, हरिद्वार)
5. **विधानसभा में कुल प्रतिनिधियों की संख्या** : 22
6. **राज्य की आय के स्रोत** : पर्यटन
7. **नदियाँ** : गंगा
8. **साक्षरता** : 60 %





जन्मदिन तुम्हारा, मिलेंगे . . .



तुम्हें अपनी जन्म तारीख तो याद होगी ही। क्या कहा 5:12:1989 यानी तुम्हारा जन्म सन् 1989 में दिसम्बर की पाँच तारीख को हुआ था। चलो इतना तो पता चल गया? लेकिन क्या तुम बता सकते हो कि उस तारीख को कौन-सा वार होगा। अरे.... बगलें झाँकने से क्या फायदा। बैठो एक आसान-सा तरीका आजमाते हैं। तो शुरू करते हैं –



वार कोड	
सोमवार	1
मंगलवार	2
बुधवार	3
गुरुवार	4
शुक्रवार	5
शनिवार	6
रविवार	0

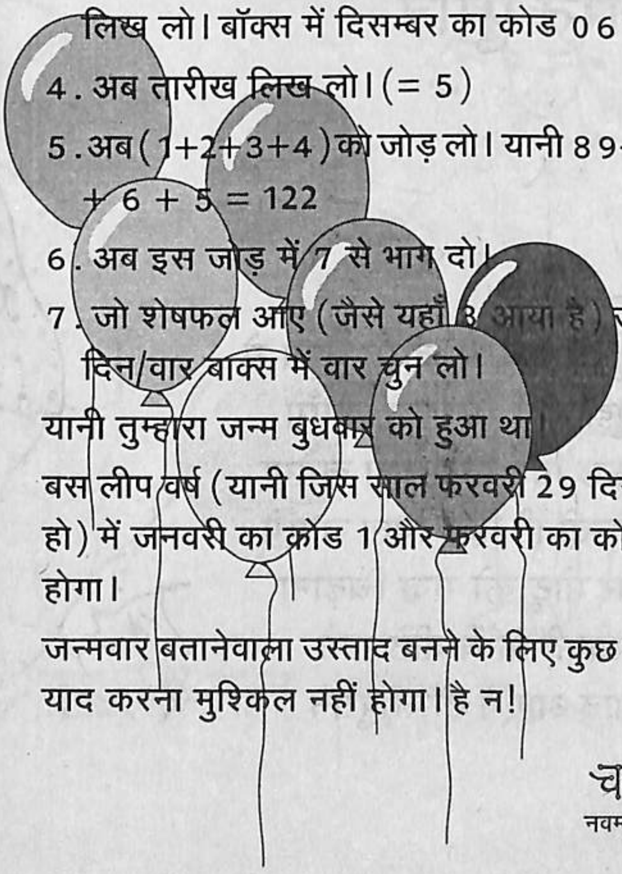
1. पहले तुम्हारे जन्म के सन् के आखिरी दो अंक लिखते हैं। (= 89) — 89
2. अब इसे एक चौथाई कर लो। (= 22.25) यहाँ जो भी जवाब आए उसका दशमलव वाला हिस्सा हम छोड़ देंगे। तो यह हुआ 22. — 89÷4= 22. 25 यानी 22
3. अब जन्म के महीने का कोड बाक्स से देखकर लिख लो। बॉक्स में दिसम्बर का कोड 06 है। — 06
4. अब तारीख लिख लो। (= 5) — 05
5. अब (1+2+3+4) को जोड़ लो। यानी 89+22+6+5 = 122 — 89+22+6+5=122
6. अब इस जोड़ में 7 से भाग दो।
7. जो शेषफल आए (जैसे यहाँ 3 आया है) उससे दिन/वार बाक्स में वार चुन लो।

7) 122 (17
   7
   52
   49
   3

यानी तुम्हारा जन्म बुधवार को हुआ था।

बस लीप वर्ष (यानी जिस साल फरवरी 29 दिन की हो) में जनवरी का कोड 1 और फरवरी का कोड 3 होगा।

जन्मवार बतानेवाला उस्ताद बनने के लिए कुछ चीजें याद करना मुश्किल नहीं होगा। है न!



महीना कोड	
जनवरी	1
फरवरी	4
मार्च	4
अप्रैल	0
मई	2
जून	5
जुलाई	0
अगस्त	6
सितम्बर	3
अक्टूबर	1
नवम्बर	4
दिसम्बर	6



याद आएँगे दोस्त पुराने

पापा की बदली के कारण
नए शहर में हम आए हैं
शहर पुराना घर भी अपना
अपने दोस्त छोड़ आए हैं
फूलबाग और ताल कटोरा
बाड़े के वे दृश्य सुहाने
याद आएँगे दोस्त पुराने

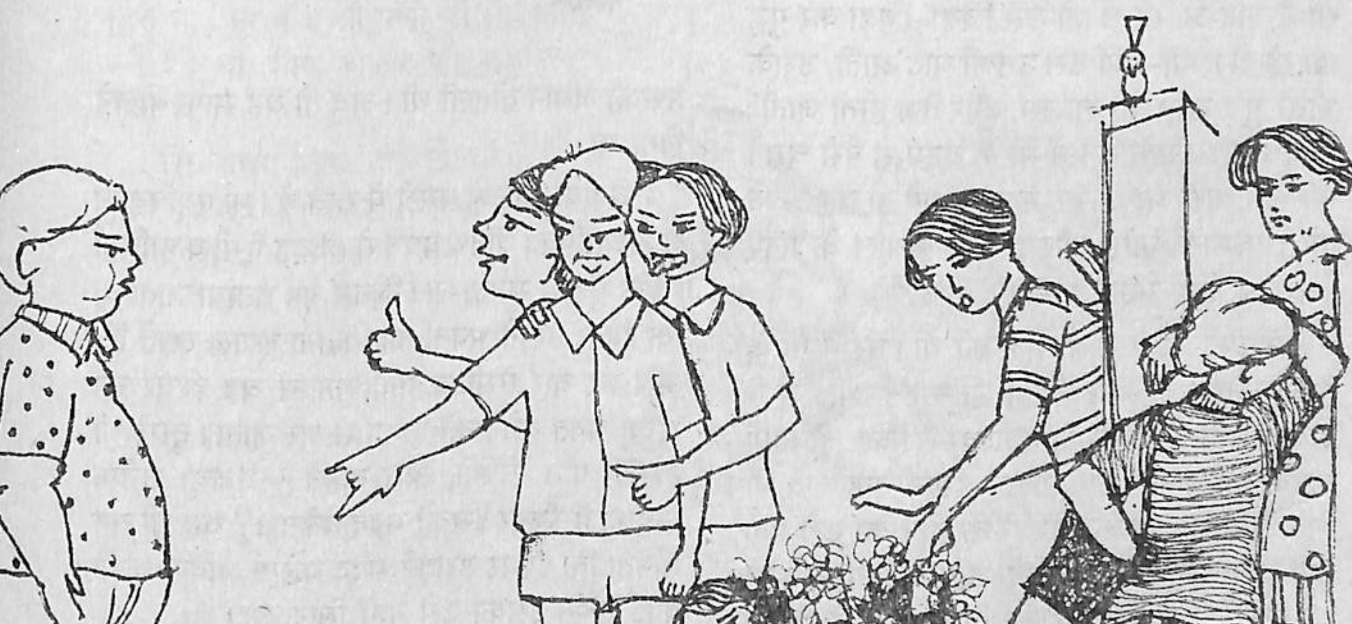
यूँ तो अब भी दोस्त बहुत से
मुझे यहाँ भी मिल जाएँगे
कुछ दिन माना बुरा लगेगा
जल्दी ही हिल मिल जाएँगे
पर मोटू को रोज़ चिढ़ाना
रिक्की के वे मीठे गाने
याद आएँगे दोस्त पुराने





पल में कुट्टी पल में मिठ्ठी
कई बार दिन में करते थे
नहीं शिकायत घर तक जाए
इसी बात से हम डरते थे
चौके छक्के धक्का मुक्की
छुपने वाले ठौर ठिकाने
याद आएँगे दोस्त पुराने

● महेश कटारे सुगम
● चित्र : अर्चना मिश्रा



सफेद गुड़

● सर्वेश्वर दयाल सक्सेना



दुकान पर सफेद गुड़ रखा था। दुर्लभ था। उसे देखकर बार-बार उसके मुँह में पानी आ जाता था। आते-जाते वह ललचाई नजरों से गुड़ की ओर देखता फिर मन मसोस कर रह जाता।

आखिरकार उसने हिम्मत की और घर जाकर माँ से कहा। माँ, बैठी फटे कपड़े सी रही थी। उसने आँख उठाकर कुछ देर दीन दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी और बड़ी देर तक देखती रही। बोली कुछ नहीं। वह चुपचाप माँ के पास से चला गया। जब माँ के पास पैसे नहीं होते तो वह इसी तरह देखती थी। वह यह जानता था।

वह बहुत देर गुमसुम बैठा रहा, उसे अपने वे साथी याद आ रहे थे जो उसे चिढ़ा-चिढ़ा कर गुड़ खा रहे थे। ज्यों-ज्यों उसे उनकी याद आती, उसके भीतर गुड़ खाने की लालसा और तेज होती जाती। एकाध बार उसके मन में माँ के बटुए से पैसे चुराने का भी ख्याल आया। यह ख्याल आते ही वह अपने को धिक्कारने लगा और इस बुरे ख्याल के लिए ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।

उसकी उम्र ग्यारह साल की थी। घर में माँ के सिवा कोई नहीं था। यद्यपि माँ कहती थी कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर है। वह चूँकि माँ का कहना मानता था इसलिए उसकी यह बात भी मान लेता था। लेकिन ईश्वर के होने का उसे पता नहीं चलता था। माँ उसे तरह-तरह से ईश्वर के होने का यकीन दिलाती। जब वह बीमार होती, तकलीफ में कराहती तो ईश्वर का नाम लेती और जब अच्छी हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देती। दोनों घंटों आँख बन्दकर बैठते। बिना पूजा किए हुए वे खाना नहीं खाते। वह रोज सुबह-शाम अपनी छोटी-सी घंटी लेकर, पालथी मारकर संध्या करता। उसे संध्या के सारे मंत्र याद थे, उस समय से ही जब उसकी जबान तोतली थी। अब तो वह साफ बोलने लगा था।

वे एक छोटे से कस्बे में रहते थे। माँ एक स्कूल में अध्यापिका थी। बचपन से ही वह ऐसी कहानियाँ माँ के मुँह से सुनता था। जिनमें यह बताया जाता था कि ईश्वर अपने भक्तों का कितना ख्याल रखते हैं। और हर बार ऐसी कहानी सुनकर वह ईश्वर का सच्चा भक्त बनने की इच्छा से भर जाता। दूसरे भी उसकी पीठ ठोंकते, और कहते - ''बड़ा शरीफ लड़का है ईश्वर इसकी मदद करेगा।'' वह भी यह मानता कि ईश्वर उसकी मदद करेगा लेकिन कभी कोई सबूत इसका उसे नहीं मिला था।

उस दिन जब वह सफेद गुड़ खाने के लिए बेचैन था तब उसे ईश्वर याद आया। उसने खुद को धिक्कारा, उसे माँ से पैसे माँगकर माँ को दुखी नहीं करना चाहिए था। ईश्वर किस दिन के लिए है? ईश्वर का ख्याल आते ही वह खुश हो गया। उसके अन्दर एक विचित्र सा उत्साह आ गया। क्योंकि वह

जानता था कि ईश्वर सबसे अधिक ताकतवर है। वह सब जगह है और सब कुछ कर सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके। तो क्या वह थोड़ा-सा गुड़ नहीं दिला सकता? उसे जोकि बचपन से ही उसकी पूजा करता आ रहा है और जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया। कभी चोरी नहीं की, किसी को सताया नहीं। उसने सोचा और इस भाव से भर उठा कि ईश्वर ज़रूर उसे गुड़ देगा।

वह तेजी से उठा और घर के अकेले कोने में पूजा करने बैठ गया। तभी माँ ने आवाज दी, ''बेटा, पूजा से उठने के बाद बाजार से नमक ले आना।''

उसे लगा जैसे ईश्वर ने उसकी पुकार सुन ली है। अन्यथा पूजा पर बैठते ही माँ उसे बाजार जाने को क्यों कहती। उसने ध्यान जमाकर पूजा की, फिर पैसे और झोला लेकर बाजार की ओर चल दिया।

घर से निकलते ही उसे खेत पार करने पड़ते थे, फिर गाँव की गली जो ईंटों की बनी हुई थी, फिर बाजार की सड़क आती थी।

उस समय शाम हो गई थी। सूरज डूब रहा था। वह खेतों में चला जा रहा था आँखें आधी बन्द किए, ईश्वर पर ध्यान लगाए और संध्या के मंत्रों को बार-बार दोहराता। उसे याद नहीं उसने कितनी देर में खेत पार किए, लेकिन जब वह गाँव की ईंटों की गली में आया तब सूरज डूब चुका था और अँधेरा छाने लगा था। लोग अपने-अपने घरों में थे। धुआँ उठ रहा था। चौपाए खामोश खड़े थे। नीम सर्दी के दिन थे।

उसने पूरी आँख खोलकर बाहर का कुछ भी देखने की कोशिश नहीं की। वह अपने भीतर देख रहा था जहाँ गहरे अँधेरे में एक झिलमिलाता प्रकाश था। ईश्वर का प्रकाश और उस प्रकाश के आगे वह आँखें बन्द किए मंत्रपाठ कर रहा था।

अचानक उसे अजान की आवाज सुनाई दी। गाँव के सिरे पर यह एक छोटी-सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी-सी आँखें खोलकर देखा। अँधेरा काफी गाढ़ा हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर सहन में लोग नमाज के लिए इकट्ठे होने लगे थे। उसके भीतर एक लहर सी आई। उसके पैर ठिठक गए। आँखें पूरी बन्द हो गईं वह मन ही मन कह उठा- ''ईश्वर यदि तुम हो और मैंने सच्चे मन से तुम्हारी पूजा की हो तो मुझे पैसे दो, यहीं इसी वक्त।''

वह वहीं गली में बैठ गया। उसने जमीन पर हाथ रखा। जमीन ठण्डी थी। हाथों के नीचे कुछ चिकना



-सा महसूस हुआ। उल्लास की बिजली-सी उसके शरीर में दौड़ गई। उसने आँख खोलकर देखा। अँधेरे में उसकी हथेली में एक अठन्नी दमक रही थी। वह मन ही मन ईश्वर के चरणों में लोट गया। खुशी के समुद्र में झूलने लगा। उसने उस अठन्नी को बार-बार निहारा, चूमा, माथे से लगाया। क्योंकि वह एक अठन्नी ही नहीं थी। उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी। उसकी सारी पूजा और सच्चाई का ईश्वर की ओर से इनाम था। ईश्वर ज़रूर है, उसका मन चिल्लाने लगा। भगवान मैं तुम्हारा बहुत छोटा-सा सेवक हूँ। मैं सारा जीवन तुम्हारी भक्ति करूँगा। मुझे कभी मत बिसराना। उल्टे-सीधे शब्दों में उसने मन ही मन कहा और बाजार की तरफ दौड़ पड़ा। अठन्नी उसने जोर से हथेली में दबा रखी थी।

जब वह दुकान पर पहुँचा तो लालटेन जल चुकी थी। पंसारी उसके सामने हाथ जोड़े बैठा था। थोड़ी देर में उसने आँख खोली और पूछा, "क्या चाहिए?"

उसने हथेली में चमकती अठन्नी देखी और बोला, "आठ आने का सफेद गुड़।"

यह कहकर उसने गर्व से अठन्नी पंसारी की तरफ गद्दी पर फेंकी। पर वह गद्दी पर न गिर उसके सामने रखे धनिए के डिब्बे में गिर गई। पंसारी ने उसे डिब्बे में टटोला पर उसमें अठन्नी नहीं मिली। एक छोटा-सा खपड़ा (चिकना पत्थर) ज़रूर था जिसे पंसारी ने निकाल कर फेंक दिया।

उसका चेहरा एकदम से काला पड़ गया। सिर घूम गया। जैसे शरीर का सारा खून निकल गया हो। आँखें छलछला आईं।

"कहाँ गई अठन्नी!" पंसारी ने भी हैरत से कहा।

उसे लगा जैसे वह रो पड़ेगा। देखते-देखते सबसे ताकतवर ईश्वर की उसके सामने मौत हो गई थी। उसने मरे हाथों से जेब से पैसे निकाले, नमक लिया और जाने लगा।

दुकानदार ने उसे उदास देखकर कहा, "गुड़ ले लो, पैसे फिर आ जाएंगे।"

"नहीं।" उसने कहा और रो पड़ा।

"अच्छा पैसे मत देना। मेरी ओर से थोड़ा-सा गुड़ ले लो।" दुकानदार ने प्यार से कहा और एक टुकड़ा तोड़कर उसे देने लगा। उसने मुँह फिरा लिया और चल दिया। उसने ईश्वर से माँगा था दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।

लेकिन अब वह ईश्वर से कुछ नहीं माँगता।

● चित्र : मनोज कुलकर्णी



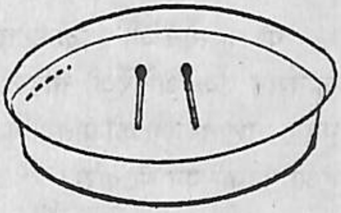
माचिस की तीली की पसंद

अच्छा तुम्हें खाने में कौन-कौन सी चीज़ें पसंद हैं? अरे....अरे... अब ज़रा रुको भी.... । ये तो बड़ी लम्बी चौड़ी सूची हो गई। एक है बेचारी माचिस की तीली, किसी को भी इसका ख्याल नहीं है कि इसे भी कुछ चीज़ें बहुत पसंद हैं। और कुछ तो इसे इतनी नापसंद हैं कि उन्हें देखते ही ऐसे दूर भागती है कि बस! चलो देखते हैं...

पहले दो माचिस की तीली, पानी से भरी एक बाल्टी, टब या और कोई चौड़े मुँह का डिब्बा, एक खाली रीफिल या वैसी ही पतली लकड़ी का जुगाड़ कर लो। आधी चम्मच शक्कर थोड़े-से पानी में घोल लो ताकि खूब मीठा घोल बने। थोड़ा सा कपड़े धोने वाला साबुन या डिटर्जेंट पावडर भी लो।

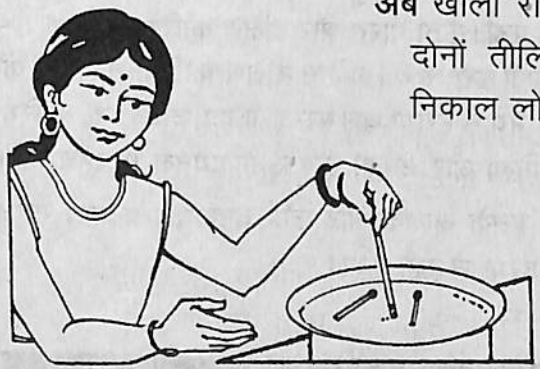


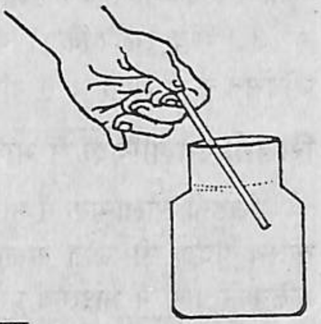
देखते हैं इन दोनों चीज़ों में से तीली को क्या चीज़ पसंद है और क्या नापसंद?



दोनों तीलियों को टब में थोड़ा पास-पास रखो।

अब खाली रीफिल या पतली लकड़ी को दोनों तीलियों के बीच डुबाओ और निकाल लो।



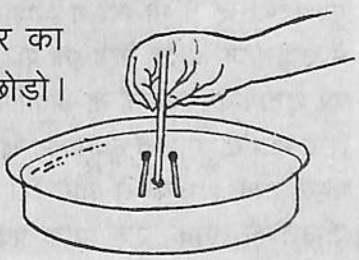


फिर लकड़ी की नोंक से थोड़ा-सा साबुन का पावडर इन दोनों तीलियों के बीच में छोड़ दो! क्या हुआ?



अब इसी तरह थोड़ा-सा शक्कर का घोल दोनों तीलियों के बीच छोड़ो।

क्या हुआ? घूम गए न!





इस बार

सिडनी ओलम्पिक



सिडनी ओलम्पिक की चकाचौंध से भरी शुरुआत तो तुमने भी ज़रूर देखी होगी और तेरह वर्षीय निक्की वेबस्टर का गीत भी सुना होगा। जितना कुछ कहा जा रहा था उससे भी कहीं ज्यादा रोमांचक शुरुआत हुई सिडनी ओलम्पिक की। कितने ही नए रिकॉर्ड बने, टूटे।

पहला सोने का पदक जीता नैंसी जॉनसन ने। नैंसी जॉनसन एक अमेरिकी महिला खिलाड़ी हैं। उन्हें यह पदक निशानेबाजी की प्रतियोगिता में मिला। यहीं से शुरू हुआ पदकों का बँटवारा।

यह ओलम्पिक का पहला ही दिन था। इस दिन हमारे देश की निशानेबाज अंजलि पाठक ने भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। वे फायनल राउंड तक पहुँचीं। हालाँकि उन्हें कोई पदक नहीं मिला। लेकिन फायनल में पहुँचने वाली वे पहली भारतीय महिला हो गईं। फायनल में उन्होंने 493.1 अंक स्कोर किए। स्वर्ण पदक जीतने वाली नैंसी जॉनसन से वे सिर्फ 4.6 अंक से पीछे रहीं।

सिडनी ओलम्पिक में भारत

सिडनी ओलम्पिक में भारत का पूरा दल सिर्फ एक कांस्य पदक ही जीत सका। लेकिन इस बार कुछ प्रतियोगिताओं में भारतीय प्रदर्शन बेहतरीन रहा।

भारत को भारोत्तोलन में कांस्य पदक मिला। यह पदक दिलवाया कर्णम मल्लेश्वरी ने। वे इस प्रतियोगिता के 69 किलोग्राम वर्ग में भाग ले रहीं थीं। मुक्केबाज गुरचरणसिंह ने भी अच्छा प्रदर्शन किया। वे तीसरे दौर में उक्रेन के आंद्रेई फेडचुक से लड़े। मुकाबला बराबरी पर छूटा। मगर जजों के अंकों के आधार पर गुरचरण सिंह मात खा गए। वे मुकाबला खत्म होने के पांच सेकेण्ड पहले तक 1 अंक से आगे थे। यदि वे इस मुकाबले में जीतते तो उनका एक पदक पक्का हो जाता।

धावक बीनामोल भी कोई पदक नहीं जीत पाईं, मगर उनका प्रदर्शन अच्छा रहा। चार सौ मीटर दौड़ के लिए क्वालीफाइंग राउंड की आठ हीट में कुल 57 एथलीटों ने भाग लिया। अपनी हीट में बीनामोल प्रथम स्थान पर रहीं। उन्होंने अपनी दौड़ 51.51 सेकण्ड में पूरी की। लेकिन वे सेमीफायनल में अपना प्रदर्शन नहीं दुहरा सकीं और सोलहवें स्थान पर रहीं। इस दौड़ में स्वर्णपदक कैथी फ्रीमेन ने जीता।

हॉकी में भी भारत की टीम सेमीफायनल में पहुँचते पहुँचते रह गई। भारत और पोलैण्ड के बीच मैच 1–1 की बराबरी पर खत्म हुआ। इसके कारण भारत को बाहर होना पड़ा। यूँ तो भारत और दक्षिण कोरिया के अंक 8–8 यानी बराबर थे। लेकिन दक्षिण कोरिया ने भारत को लीग मैच में हराया था। बस इसी का फायदा द. कोरिया को मिला और उनकी टीम सेमीफायनल में पहुँच गई।

इसके अलावा और कोई चमकदार प्रदर्शन भारत की तरफ से नहीं हुआ।



अमेरिकी खिलाड़ी मैरियन जोन्स ने पाँच पदक जीतकर रिकार्ड बनाया।

सिडनी ओलम्पिक से...

* ओलम्पिक देखने का अपना मजा है। कई लोगों ने अपनी ज़िन्दगी भर की कमाई सिडनी ओलम्पिक देखने में लगा दी। इनसे भी एक कदम आगे निकल गए बोस्नियाई प्रधानमंत्री। उन्हें सिडनी ओलम्पिक के शुभारम्भ समारोह में अतिथि बनाया गया था। सिडनी ओलम्पिक के रोमांच के कारण वे एक-एक दिन करके पंद्रह दिन सिडनी में ठहर गए। उधर बोस्निया में कई प्रशासनिक निर्णय उनके वहाँ न होने के कारण रुक गए। बोस्निया के राष्ट्रपति अब उन्हें पद से हटाने पर विचार कर रहे हैं।
* कनयान एक एथलीट हैं। वे 9 साल की उम्र से रेटीना के दोष से पीड़ित हैं। आज उन्हें दिखना भी लगभग बन्द हो गया है। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने न सिर्फ ओलम्पिक में भाग लिया बल्कि 1500 मीटर दौड़ में सेमीफायनल में भी स्थान बनाया। है न कमाल!
* जिस तरह आजकल क्रिकेट में मैच फिक्सिंग का ज़ोर है वैसे ही कुछ अन्य खेलों में प्रतिबंधित दवाओं का हल्ला है। कुछ खिलाड़ी अपनी ताकत बढ़ाने के लिए प्रतियोगिता में भाग लेने से पहले दवाओं का उपयोग करते हैं। विभिन्न खेल संगठनों ने खिलाड़ियों पर ऐसी दवा लेने के लिए प्रतिबंध लगा रखा है। प्रतियोगिता में भाग ले रहे खिलाड़ियों की पेशाब की जाँच से यह पता लगाया जाता है कि उसने ऐसी कोई दवा ली है या नहीं। इस जाँच को डोपिंग टेस्ट कहा जाता है। डोपिंग टेस्ट सिडनी ओलम्पिक में छाया रहा। रोमानिया की एक जिम्नास्ट को जीता हुआ स्वर्ण पदक वापस करना पड़ा। कई अन्य एथलीट भी डोपिंग टेस्ट में पकड़े जाने के कारण प्रतियोगिताओं में भाग लेने से रह गए।
* अमेरिका की मेरियन जोंस ने ओलम्पिक शुरू होने से पहले पाँच स्वर्ण पदक जीतने का दावा किया था। वे पाँच स्वर्ण पदक तो नहीं जीत पाईं, पर उन्होंने तीन स्वर्ण और दो कांस्य पदक ज़रूर जीते।
* दुनिया के सबसे तेज दौड़ने वाले नए धावक हुए मौरिस ग्रीन जिन्होंने सौ मीटर की दौड़ सिर्फ 9.87 सेकेण्ड में पूरी की। और धाविका मेरियन जोंस जिन्होंने 100 मीटर की दौड़ 10.75 सेकेण्ड में पूरी की।
* ट्रायथलान यानी तीन खेलों की प्रतियोगिता को इस ओलम्पिक में पहली बार शामिल किया गया। इसके महिला वर्ग में स्वर्णपदक जीता स्विटज़रलैंड की ब्रिजिट मॅकमोहन ने। इसमें डेढ़ किलोमीटर तैरने के बाद एथलीट को 40 किलोमीटर साइकिल चलाना होती है और दस किलोमीटर दौड़ना भी होता है। मॅकमोहन ने इन तीनों को सिर्फ दो घण्टे और चालीस सेकेण्ड में कर दिखाया।
* ट्रायथलान के अलावा सिडनी ओलम्पिक में एक और नया खेल शामिल किया गया – ताइक्वांडो। ताइक्वांडो में कांस्य पदक से मामूली अन्तर से चूक जाने पर डेनमार्क के मोहम्मद दहमानी ने मैदान से हटने से इन्कार कर दिया। आखिर में उन्हें मैदान से बाहर ले जाने के लिए पुलिस को बुलाना पड़ा।
* फ्रांस की जेनी लोगो ने अटलांटा ओलम्पिक में साइकिल रोड रेस का स्वर्ण पदक जीता था। सिडनी में भी यह उम्मीद थी कि वे ही स्वर्ण पदक जीतेंगी। जब रेस चल रही थी, तभी बारिश शुरू हो गई। रेस में शामिल अन्य खिलाड़ी अपने साथ बरसाती लाए थे। उन्होंने तुरन्त बरसाती पहन ली। लेकिन जेनी बरसाती लाना भूल गई थीं। बारिश की बौछार ने उनकी गति धीमी कर दी। वे रेस में 26 वें नम्बर पर रहीं।

भारोत्तोलन

भारोत्तोलन यानी भार तोलना। मोटे अर्थ में देखें तो भार उठाने का खेल। शायद सबसे प्राचीन खेल है। गाँवों में चक्की के पाटनुमा वज़नी पत्थर उठाने का अभ्यास अखाड़ों में करवाया जाता है। बैलगाड़ी के पहिए या धुरी लगे पहिए उठाने का खेल भी होता रहता है। भारोत्तोलन इसी का एक रूप है।

सिडनी ओलम्पिक में कर्णम मल्लेश्वरी ने इसी खेल में कांस्य पदक जीता है।

खिलाड़ियों के वज़न के हिसाब से प्रतियोगिता के अलग-अलग वर्ग होते हैं। मल्लेश्वरी ने 69 किलोग्राम वर्ग में भाग लिया था।

प्रतियोगिता में इस खेल के दो हिस्से होते हैं। भाग लेने वाले खिलाड़ी को दो तरीकों से भार उठाना होता है। ये तरीके हैं 'स्नैच' और 'क्लीन एण्ड जर्क'।

क्या है स्नैच और क्लीन एण्ड जर्क

स्नैच तरीके में – एथलीट के सामने भार छड़ रखी होती है। इस भार छड़ को पकड़ते समय भारोत्तोलक की हथेलियाँ ज़मीन की ओर रहनी चाहिए। इसमें वजन को एक हरकत में, बगैर रुके सिर के ऊपर ले जाना होता है। हाँ वजनी छड़ के नीचे लाते समय उकड़ू भी बैठ सकते हैं।

क्लीन एण्ड जर्क में – इस तरीके में भी भारोत्तोलक हथेलियाँ नीचे रखते हुए वजन छड़ पकड़ता है और एक ही झटके में वजन कंधे तक ले जाता है। इस स्थिति में



भारोत्तोलक इस वजन को छाती के ऊपर की हड्डियों पर थाम सकता है। वह चाहे तो पैर पीछे भी ले जा सकता है। और फिर वजन सिर के ऊपर ले जा सकता है। ज़ाहिर है इस तरीके में पहले तरीके यानी 'स्नैच' से ज्यादा वजन उठाया जा सकता है।

हरेक तरीके में हर प्रतियोगी को तीन-तीन अवसर मिलते हैं। प्रत्येक तरीके में उठाया गया सबसे अधिक वज़न प्रतियोगी का सबसे अच्छा प्रदर्शन माना जाता है। उसने कुल कितना वज़न उठाया इसका फैसला दोनों तरीकों यानी 'स्नैच' और 'क्लीन एण्ड जर्क' में प्रतियोगी द्वारा उठाए गए सर्वश्रेष्ठ वज़न के योग को माना जाता है।

पहले 'स्नैच' तरीके से वज़न उठाया जाता है और बाद में 'क्लीन एण्ड ज़र्क' तरीके से। उदाहरण के लिए हम वह प्रतियोगिता देखें, जिसमें मल्लेश्वरी ने पदक जीता।

स्नैच में पहला दौर – मल्लेश्वरी और हंगरी की मार्कस दोनों ने ही 105 –105 किलोग्राम वजन उठाया। जबकि चीन की प्रतियोगी लिन ने 107.5 किलोग्राम।

दूसरा दौर – कर्णम मल्लेश्वरी ने 107.5 किलोग्राम वजन उठाया। अबकी बार चीन व हंगरी की प्रतियोगियों ने 110 –110 किलोग्राम वज़न उठाया।

तीसरा दौर – मल्लेश्वरी ने 110 किलोग्राम वजन उठाया। लिन ने 112.5 किलोग्राम वजन उठाने की कोशिश की मगर वे असफल रहीं। जबकि मार्कस ने 112.5 किलोग्राम वजन उठा लिया।

क्लीन एण्ड जर्क में पहला दौर – मल्लेश्वरी और मार्कस ने 125 –125 किलोग्राम वजन उठाया जबकि लिन ने 132.5 किलोग्राम।

दूसरा दौर – मार्कस एवं मल्लेश्वरी ने थोड़ा बेहतर प्रदर्शन करते हुए 130 –130 किलोग्राम वजन उठाया। लिन 137.5 किलोग्राम वजन उठाने की कोशिश की लेकिन वे सफल नहीं हो पाईं।

तीसरा दौर – तीनों प्रतियोगी ही इस दौर में असफल हो गईं।

अब यह देखें कि हर प्रतियोगी ने कुल कितना वज़न उठाया –

खिलाड़ी	स्नैच	क्लीन एण्ड जर्क	कुल
मल्लेश्वरी	110	130	240 किलोग्राम
लिन	110	132.5	242.5 किलोग्राम
मार्क्स	112.5	130	242.5 किलोग्राम

यह स्पष्ट है कि मल्लेश्वरी ने शेष दो प्रतियोगियों की तुलना में कम वज़न उठाया। लेकिन अन्य दो ने बराबर–बराबर वज़न उठाया।

ऐसी स्थिति में फैसला प्रतियोगियों के अपने वज़न के आधार पर किया जाता है। जिसका वज़न कम हो वह विजेता। वज़न भी अगर बराबर हो तो जिसकी उम्र कम हो उसे विजेता माना जाता है। और अगर उम्र भी बराबर हो तो जिसने पहले वज़न उठाया वह विजेता माना जाता है।

इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों के वज़न के आधार पर फैसला हुआ। लिन, मार्कस से कम वज़न की थी, इसलिए उसे स्वर्ण पदक मिला। जबकि मार्कस को रजत और मल्लेश्वरी को कांस्य पदक मिला।



कर्णम मल्लेश्वरी (दाएँ से दूसरी) अपनी माँ, भाई तथा बहन के साथ

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल



माथापच्ची

(1)

46 × 96 = 64 × 69

12 × 42 = 21 × 24

14 × 82 = 41 × 28

ज़रा इन आँकड़ों को गौर से देखो। बस अंकों की उलटफेर से यह समीकरण बने हैं। हर समीकरण के दोनों तरफ का गुणा भी बराबर है। क्या तुम ऐसे और समीकरण बना सकते हो?

(2)

एक घोड़े और एक गधे का मन हुआ कि चलो आज कंचे खेलें। दोनों ने अपने-अपने लिए कुछ कंचे खरीदे रास्ते में घोड़े ने पूछा, ''क्यों भाई कितने कंचे खरीद लाए।''

गधे ने जवाब दिया, ''यदि तुम मुझे एक कंचा दे दो तो मेरे कंचों की संख्या तुमसे तिगुनी हो जाएगी।''

घोड़े ने कहा, ''और अगर तुम मुझे अपने कंचों में से एक दे दो, तो हम दोनों के पास बराबर-बराबर कंचे हो जाएँगे।''

क्या तुम बता सकते हो कि इन दोनों खिलाड़ियों के पास कितने-कितने कंचे थे?

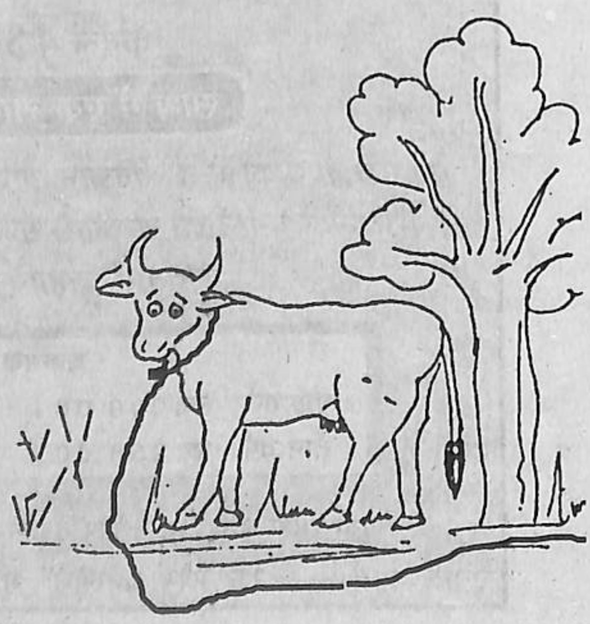
(3)

सुखिया तरबूज बेच रहा था। दिनभर के बाद अंत में उसके पास दो ही तरबूज बचे। दोनों बिल्कुल गोल थे। एक का व्यास दूसरे के व्यास से एक चौथाई बड़ा था, यानी सवाया था। लेकिन बड़े तरबूज का दाम छोटे तरबूज से डेढ़ गुना था।

क्या तुम बता सकते हो कि कौन-सा तरबूज खरीदना फायदेमंद होगा?

(4)

एक गाय एक पेड़ के नीचे खड़ी है उसके गले में दस फुट लम्बी रस्सी बंधी है। बिना गुणा भाग किए बताओ कि वह कितने क्षेत्र की घास खा सकती है।



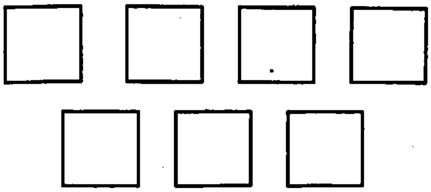
(5)

चलो एक आसान सा जोड़ का सवाल भी करें।

9999 + 999 + 99 + 9 + 0 = ?

(7)

इन सात छोटे वर्गों में ऐसी संख्याएँ भरो कि उनका योग 100 हो जाए।



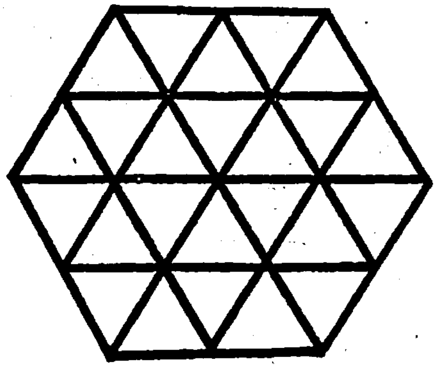
(8)

यह एक मेले का किस्सा है। इसमें हमारे शहर के 25 लेखक, 20 डॉक्टर, 18 क्रिकेट खिलाड़ी और 12 बैंक में काम करने वाले लोगों ने भाग लिया।

इन सभी ने इस मेले में कुल 1330 रुपए खर्च किए। यह तो नहीं मालूम कि लेखकों, डॉक्टरों, खिलाड़ियों और बैंक में काम करने वाले लोगों ने अलग-अलग कितना खर्च किया। पर हाँ यह मालूम है कि पाँच लेखकों ने चार डॉक्टरों के बराबर खर्च किया। नौ क्रिकेट खिलाड़ियों ने 12 डॉक्टरों के बराबर खर्च किया। आठ बैंक कर्मियों ने 6 क्रिकेट खिलाड़ियों जितना खर्च किया।

अब यह तो ज़रूरी नहीं कि सारे बैंकवालों ने बराबर ही पैसे खर्च किए होंगे। या सभी लेखकों ने बराबर पैसे खर्च किए होंगे। लेकिन इन आँकड़ों से इतना तो पता कर ही सकते हैं कि अलग-अलग समूहों ने कितने-कितने रुपए खर्च किए। क्या तुम भी मुझसे सहमत हो? अगर हाँ तो पता लगाकर बताओ।

(6)



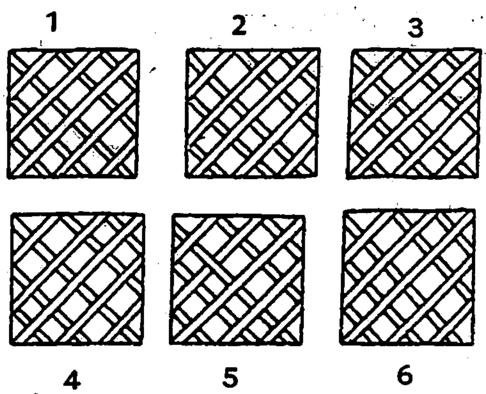
इस आकृति को देखो। ऐसे तो इसमें सिर्फ 24 त्रिभुज नजर आ रहे हैं। लेकिन असित कहता है कि इसमें 40 त्रिभुज हैं। रमा कहती है कि नहीं इसमें तो 38 त्रिभुज ही हैं। बताओ दोनों में से किसकी बात सही है?

(9)

मैं एक ऐसी संख्या के बारे में सोच रहा हूँ, जिसके एक तिहाई को अगर उसी संख्या के दसवें और बारहवें भाग से जोड़ दें तो इस संख्या से 58 कम रह जाता है। क्या तुम जान गए कि मैं किस संख्या की बात कर रहा हूँ?

(10)

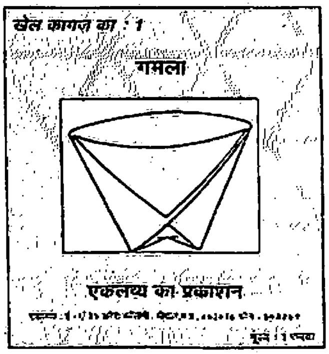
इनमें से कौन-सी बुनावट अलग है?



एकलव्य द्वारा प्रकाशित

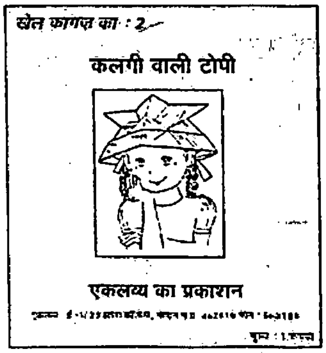
ओरीगेमी की पाँच किताबें

हर एक किताब में एक मॉडल बनाने का तरीका।



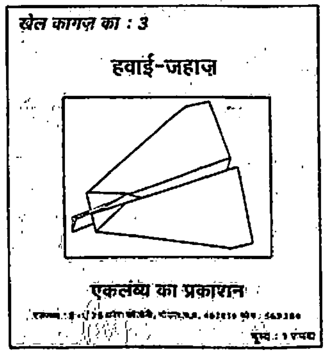
गमला

मूल्य : 1 रुपए



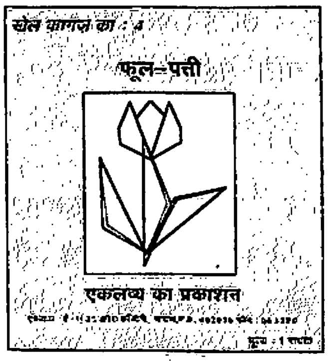
कलगी वाली टोपी

मूल्य : 1 रुपए



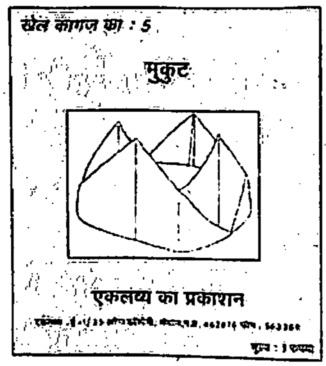
हवाईजहाज़

मूल्य : 1 रुपए



फूल-पत्ती

मूल्य : 1 रुपए

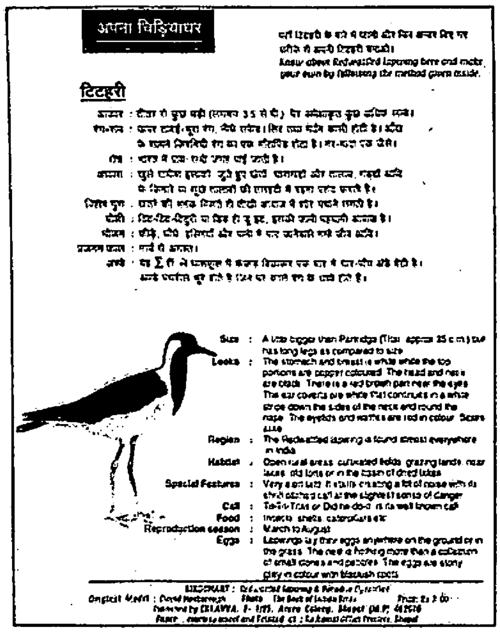


मुकुट

मूल्य : 1 रुपए

चिड़िया चार्ट

एक चार्ट में दो चिड़ियों और उनके मॉडल बनाने की जानकारी



अपना चिड़ियाघर मूल्य : 3 रुपए

इन किताबों और चार्ट के 25 या उससे अधिक सेट मँगाने पर डाक खर्च हम देंगे।

मनीऑर्डर भेजने के लिए पता

एकलव्य

ई - 1/25 अरेरा कॉलोनी,

भोपाल, 462 016 म. प्र.

हमारे शिक्षक : 22



यह श्रृंखला काफी समय से छप रही है। इसमें तुम कई लोगों के स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें पढ़ चुके हो। अपने स्कूली जीवन की बातें सभी लोग एक-दूसरे को सुनाते हैं। यदि तुमने अभी तक अपने अनुभव नहीं भेजे हों तो जल्द भेजो। साथ ही अपने माता-पिता और बड़ों से कहो कि वे चकमक के लिए अपने शिक्षकों के बारे में लिखें।

ऐसे थे मेरे गुरु जी

सन् 1945 की बात है। मैं कक्षा पाँच का छात्र था। जहाँ मैं रहता था उसी मोहल्ले में मेरे गुरु जी अयोध्या प्रसाद दुबे जी भी रहते थे। दुबे जी रोज प्रातः चार-पाँच बजे भ्रमण को जाते थे। उस समय कुछ अँधेरा भी रहता था।

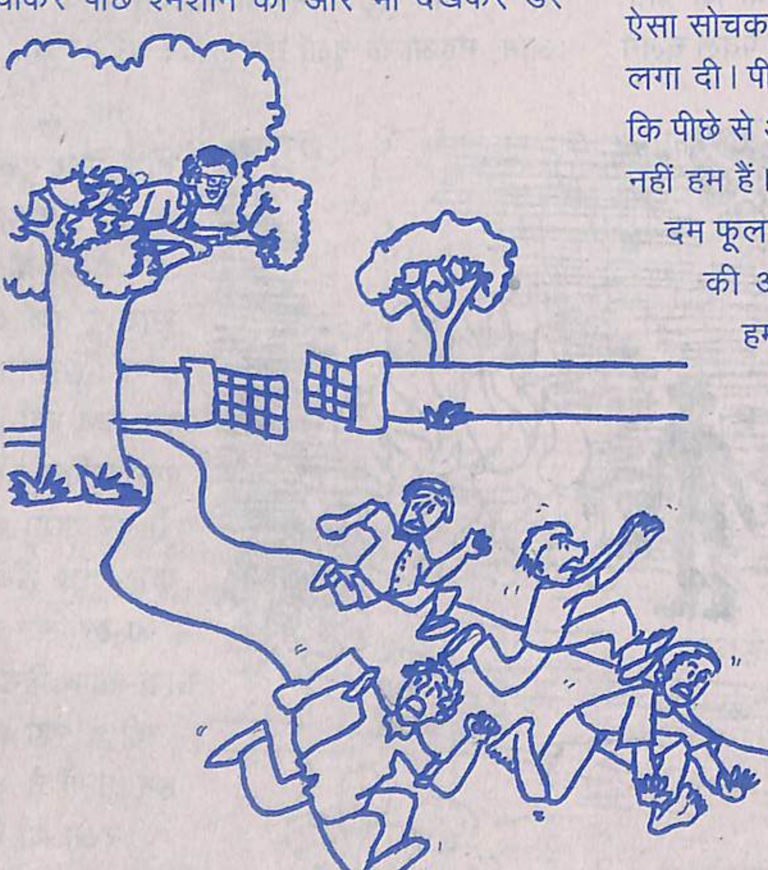
एक दिन मेरे गुरु जी ने मुझसे भी प्रातः भ्रमण को जाने के लिए कहा और बतलाया कि प्रातः भ्रमण से हमें शुद्ध वायु मिलती है, और पैदल चलने तथा दौड़ने से शरीर स्वस्थ रहता है, बुद्धि तेज होती है।

गुरु जी के कहने पर हम चार मित्र गोपाल, गोरेलाल, मैं और गफूर प्रातः भ्रमण को जाने लगे। जहाँ हम लोग भ्रमण को जाते थे वह स्थान शहर से बाहर था। वहाँ पहले श्मशान पड़ता था उसके आगे पक्की सड़क मिलती थी जिसके दोनों ओर आम, महुआ के वृक्षों का सुन्दर बगीचा था।



एक दिन हम चारों मित्र गुरुजी के आने से पहले ही दौड़ते-दौड़ते श्मशान तक चले गए। श्मशान में आग जल रही थी, एक व्यक्ति थोड़ी दूरी पर खड़ा था। कुछ-कुछ अँधेरा था इसलिए वह साफ-साफ दिखाई नहीं दे रहा था। हम लोगों ने सुन रखा था कि श्मशान में भूत-प्रेत रहते हैं।

उस व्यक्ति को श्मशान में आग के पास खड़ा देखकर हम सभी डर गए और आगे न बढ़कर पीछे की ओर दौड़ पड़े। कुछ दूर गए थे कि गुरु जी आते दिखे। उन्हें श्मशान के अँधेरे में आग के पास खड़े व्यक्ति की बात बताई और गुरु जी से कहा, ''गुरु जी हमें तो वह व्यक्ति कोई भूत-प्रेत लगा और हम डरकर यहाँ आ गए हैं।'' गुरु जी ने हम लोगों को न डरने की बात कहते हुए अपने साथ चलने को कहा। जब हम लोग गुरु जी के साथ श्मशान तक फिर से आए तो उस समय वह व्यक्ति श्मशान में नहीं दिखा। आग जल रही थी। गुरु जी के साथ हम सब श्मशान के आगे डरते-डरते निकले। गुरु जी हमारे साथ थे, इसलिए हम आगे निकल गए। कभी-कभी हम गुरु जी की आँख बचाकर पीछे श्मशान की ओर भी देखकर डर जाते और गुरु जी के आगे चलने लगते थे। गुरु जी ने कहा, ''भगवान का नाम लो।''



एक दिन हम लोगों ने निश्चय किया कि कल प्रातः महुआ बीनकर लाएँगे। कुछ जल्दी जाकर बीन लेंगे। चारों मित्र दूसरे दिन जल्दी उठे और चल दिए प्रातः भ्रमण पर। जब श्मशान आया तो गफूर 'या अली, या अली' कहता और हम लोग 'जय बजरंग बली, जय बजरंग बली' कहते हुए दौड़कर पार निकल गए।

जब मुख्य सड़क पर महुआ के वृक्ष के नीचे महुआ टपकने का इन्तज़ार करते खड़े हुए तो अचानक जोर से महुआ की डालियाँ हिलने लगीं और महुआ टपकने लगे। हम लोगों ने समझा कि श्मशान का भूत होगा जो महुआ को हिला रहा है। ऐसा सोचकर हम लोगों ने भरपूर ताकत से दौड़ लगा दी। पीछे तो श्मशान था। कुछ दूर दौड़े थे कि पीछे से आवाज़ आई, ''कहाँ भाग रहे हो? डरो नहीं हम हैं।'' आवाज़ सुनकर और तेज दौड़े तो दम फूलने लगा, फिर भी रुके नहीं। फिर ज़ोर की आवाज़ आई, ''रुक जाओ, डरो नहीं हम हैं।''

गफूर बोला, ''यह तो गुरु जी की आवाज़ है।'' हम लोग रुक गए। वापस आए तो गुरु जी खड़े हँस रहे थे। गुरु जी को देखकर हम लोगों की जान में जान आई।

गुरु जी बोले, ''तुम्हारे आने के पहले मैं महुआ पर चढ़ गया था और तुम्हारी परीक्षा लेने को मैंने ही महुआ

महुआ की डाल को हिलाया था। तुमने भूत का भ्रम माना और डरकर भागने लगे। सोचने की बात है कि मृत्यु के बाद जिस शरीर को श्मशान में जला दिया वह राख बन गया। उस राख को नदी में बहा दिया। अब क्या रहा, भूत-प्रेत तो हमारा भ्रम है।''

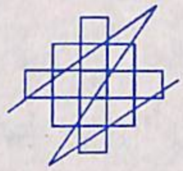
गुरु जी के साथ हम लोग घर आ गए। प्रातः भ्रमण को जाते रहे पर श्मशान वाले स्थान को फिर कभी डरकर पार नहीं किया।

● ठाकुर जमना प्रसाद 'जलेश', दमोह
(जलेश जी स्वयं अध्यापक रहे हैं
और वरिष्ठ बाल-साहित्यकार हैं।)
● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

अक्टूबर 2000 अंक के माथापच्ची के हल

1. 2 दिन।

2.



3.



4. यानी तुम्हें चौथे ढेर की पूरी 240 जामुनें मिलेंगी।

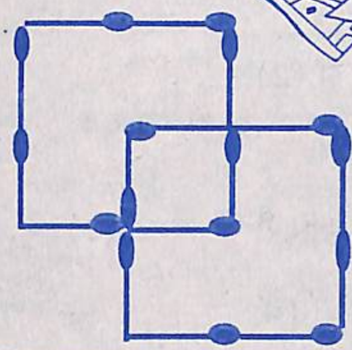
7. घड़ी में, ग्यारह बजने के दो घण्टे बाद एक बजता है।

8. बन्दर, तेंदुआ, सियार, नीलगाय।

6. 2 नम्बर का टुकड़ा।



5.

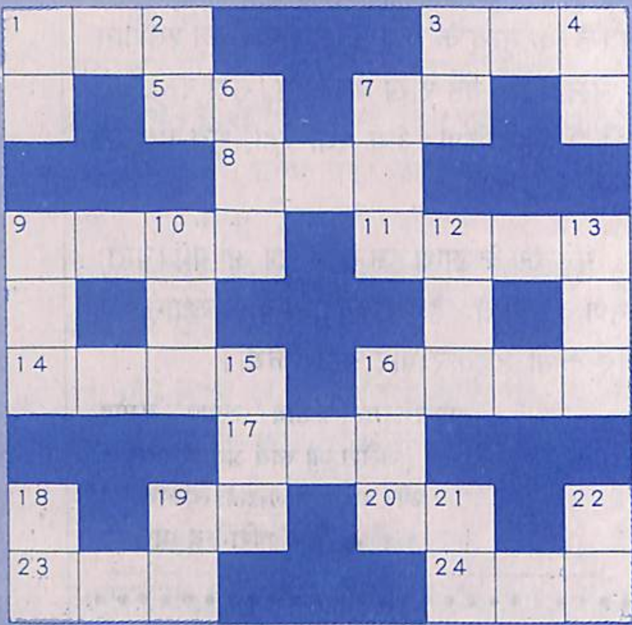


वर्ग पहेली 110 का हल

		प	ह	ल	वा	न		रो
ना	शा	द			ह		सा	ज
ह			पा		न	थ		गा
क	था	ना	य	क		ल	ह	र
	म		ल		द्वा		ल	
अ	ना	र		ला	प	र	वा	ह
प		फा	ल		र			वा
वा	म		बा			चू	स	ना
द		स	दा	ब	हा	र		

वर्ग पहेली 110 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं – आभास मुखर्जी, **दिल्ली** और चम्पालाल कुशवाहा, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, **म. प्र.**। इन्हें नवम्बर, 2000 का अंक भेजा जा रहा है।

वर्ग पहेली - 112



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. पढ़ाने वाला, गुरू (3)
3. हिन्दुस्तान (3)
5. चालीस सेर का तौल है हमारा जी (2)
7. चिट्ठी (2)
8. सरल का उल्टा (3)
9. कल रात में मात्रा काटकर ताली बजाओ (4)
11. तनकर चलने में कागज़ या कपड़े के टुकड़े हैं (4)
14. पानी भरकर रखने की विशाल जगह (4)
16. अचकन की उलटफेर में एक मात्रा जोड़ो तो सहसा हो जाए (4)
17. मोती (3)
19. दिवस या वार (2)
20. लाठी या डण्डा (2)
23. एक बीमारी जिसमें जोड़ों का दर्द होता है (3)
24. बस मीर की शायरी में हवा है (3)

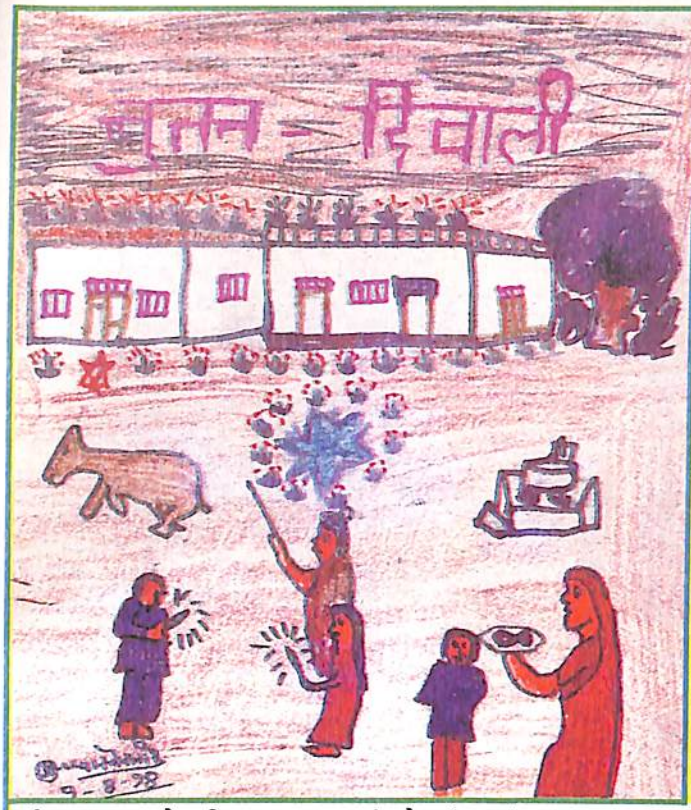
संकेत : ऊपर से नीचे

1. लौ (2)
2. अधिक मस्ती न करो में है ज़रा-सी (2)
3. आभा तनिक ले लो, चावल (2)
4. शरीर (2)
6. असल का विलोम (3)
7. सिक्कों की आवाज़ (3)
9. तुम्हारी शर्ट या कुर्ता (3)
10. शत प्रतिशत लाभ में ढूँढो खोज (3)
12. पिस्तौल (3)
13. अम्ल और क्षार की क्रिया से बनने वाली चीज़, वह जिसका उपयोग रोज़ दाल-सब्ज़ी आदि में किया जाता है (3)
15. एक देश और एक राग का नाम (3)
16. अलका की उलटफेर में बुरा वक्त या भुखमरी की स्थिति (3)
18. एक खास प्रजाति का साँप (2)
19. दिवाली के त्यौहार पर जलाते हैं (2)
21. अगर चीज़ हो तो घनी और मज़बूत, अगर व्यक्ति हो तो आलसी या ज़िद्दी (2)
22. एक जानवर ऐसा, जिसकी दुम पर पैसा (2)

रविशंकर अजनेरिया, आमूपुरा, होशंगाबाद, म.प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली

वर्ग पहेली – 112 का हल चकमक के जनवरी, 2001 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का जनवरी, 2001 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।



गोपाल दास बैरागी, बालागुड़ा, मंदसौर (म.प्र.)



शिवपूजन, आठवीं, रमतला, बिलासपुर (म.प्र.)



मोनीत ए., छठवीं, भरतपुर, गुजरात।

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2000



रेणु शर्मा (पता नहीं लिखा)